भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 15 | **मार्च-अप्रैल** 2014 | **अंक** 3-4

पढ़ने के हैं और भी फायदे

ज्ञान बढ़ाने के लिए तो सब पढ़ते हैं, लेकिन हाल ही में फ्रांस की एक यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध के अनुसार पढ़ना मस्तिष्क के लिए एक बेहतरीन एक्सरसाइज है। इससे ब्रेन में रक्त संचार तेजी से होता है। हमारे मस्तिष्क की कार्य-प्रणाली भी मांसपेशियों की तरह होती है। उसका जितना अधिक इस्तेमाल करेंगे, वह उतने ही अच्छे ढंग से काम करेगा। पढ़ते समय हमारे मस्तिष्क का दायां और बायां हिस्सा समान रूप से सक्रिय होता है, जो दिमाग की सेहत के लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है। जो लोग आँखों की कमजोरी की वजह से ज्यादा नहीं पढ़ पाते, उनके लिए ऑडियो बुक्स सुनना फायदेमंद साबित होता है। इससे मस्तिष्क के उन हिस्सों की सक्रियता बढ़ती है, जो भावनाओं और अनुभवों को सुरक्षित रखने के लिए जिम्मेदार होते हैं। जब पढ़ने के इतने फायदे हैं तो फिर हम इसे अपनी आदत में क्यों न शामिल करें!

पाठक के दिल तक

आप एक कहानी पढ़ रहे हैं। कहानी का किरदार डर रहा है और आपके सीने में भी जकड़न महसूस होने लगी है! किरदार दुखी है आपके चारों तरफ भी अंधेरा-सा छा गया है! किरदार घबराया हुआ है तो आपकी त्वचा का तापमान भी बदल गया है! यह सब कोई कल्पना नहीं है, यह सच में मुमकिन है। रीडिंग का लाइव अनुभव देने के लिए ऐसी किताब बनाई जा रही है जिससे पाठक सिर्फ पढ़ेंगे नहीं, महसूस भी कर सकेंगे। अमेरिका की एम०आई०टी० यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने सेंसरी फिक्शन नाम से शुरू किए गए एक प्रोजेक्ट के अन्तर्गत किताब का यह नमूना तैयार किया है। यह किताब सेंसर और एक्यूएटर्स से लैस है और इसे पाठक के कपड़ों से जोड़ा जाता है। जैसे ही कहानी की रूपरेखा आगे बढ़ती है यह किताब पाठक को किरदार की स्थिति और भावना को बिलकुल उसी तरह महसूस करवाती है मानो वह पढ़ नहीं रहा है, खुद उस कहानी का एक हिस्सा है। पढ़ने का यह नया डिजिटल अनुभव पाठकों को कितना पसंद आएगा यह देखना भी दिलचस्प होगा।

अब चिड़िया क्यों नहीं आती माँ ?

दूर-दूर तक हवाओं में तैरता यह मासूम सवाल निष्करुण उपभोक्ता-संस्कृति के अनाचार की करुण-व्यंजना बनकर अभी तक ज़ेहन में कौंध रहा है। एक शिशु-कविता की यह पंक्ति प्रकृति के निरंकुश शोषण और पर्यावरण के असन्तुलन के कारण क्रमश: जैव-प्रजातियों के विलुप्त होने का संकेत-मात्र है किन्तु बहुत कुछ कह जाती हैं ऐसी कविताएँ। बच्चों-जैसे सीधे-सरल सवाल, मासूम-जिज्ञासाएँ, सितारों के बीच सैर करने की ललक लिये हमारे भविष्यत् का यह बचपन अपने क्षितिज खोलने की कोशिश कर रहा है।

हमारे मस्तिष्क के अवचेतन-कक्ष में न जाने कितनी स्मृतियाँ, कितने बिम्ब, कितनी ध्वनियाँ और भी कितना-कुछ संचित है यह खुद हम भी नहीं जानते। अचानक् कभी कोई गवाक्ष खुलता है और मौसमी हवा के झोंके की तरह सामने उपस्थित हो जाता है एक छाया-बिम्ब जो अमूर्त छायाभास नहीं बल्कि सजीव-साकार अस्तित्व होता है। व्यक्तिगत स्तर पर हमारे अस्ति-बोध से जुड़ा यह व्यक्तित्व कुछ देर के लिए ही सही अपनी समग्रता में हमारे साथ जीवंत हो उठता है भले ही वह अतीत के किसी कालखण्ड का संक्रमण करते हुए आविर्भूत हुआ हो।

दरअसल अभी हम एक मेले से वापस लौटे हैं जिसकी थीम थी 'बाल-साहित्य'। अपने बचपन की तुलना में वर्तमान-शिशु का बचपन और उसकी इलेक्ट्रॉनिक-अभिरुचियाँ देखकर युगधर्मा-किलकारियों का अर्थ समझने के लिए मैं भी 'किड्स-बबल' के गलियारों में घूमता रहा जो इस मेले में बच्चों के आकर्षण का केन्द्र था। यहाँ हमारा आशय दिल्ली के प्रगति मैदान में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला : 2014' से है। प्रकाशक होने के नाते मेले में दायित्वपूर्ण हिस्सेदारी हमारा धर्म तो था ही, कर्म एवं व्यवसाय भी। अत: पूरी निष्ठा के साथ मैं इस वैश्वक-ज्ञान-यज्ञ में आहुति दे रहा था। एक स्तर पर यह मेला दूसरे मेलों से हटकर है। प्रथमत: इसमें सभी मानक भारतीय-भाषाओं के साथ कई विदेशी भाषाओं के प्रकाशक, वितरक, लेखक मौजूद होते हैं और दूसरा यह कि मेले की एक थीम निर्धारित कर ली जाती है। थीम को केन्द्र में रखकर साहित्यिक-परिचर्चाएँ, सांस्कृतिक-आयोजन होते हैं। दूसरी ओर विभिन्न स्टालों पर किताबों की खरीद-फरोख्त के साथ व्यावसायिक-विमर्श भी चलते रहते हैं। इसी परिवेश की व्यस्तताओं के बीच कुछ क्षण अवकाश लेकर मेले में घूम आया बच्चों के साथ, बच्चों के बीच।

प्रगति मैदान के विश्व पुस्तक मेले के समांतर देश की राजधानी से लेकर सभी प्रान्तों, नगरों और गाँवों के गली-कूचे तक एक और मेले के आयोजन की तैयारी

शेष पृष्ठ 2 पर

चल रही है। नगाड़ों पर थाप पड़ रही है, वसन्त में गुलाब की पंखुरियाँ, अबीर-गुलाल उड़ाते, नाचते-गाते मैदानों में भीड़ जुट रही है, जुटाई जा रही है जहाँ आ-जा रहे हैं जनता-जनार्दन के भाग्य-विधाता। सार्वभौम, स्वतंत्र भारत के इतिहास में 16वीं लोकतांत्रिक-संसद के राजनीतिक-लोकपर्व यानी चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। भारतीय जनगण का यह लोकपर्व वस्तुत: जनता के विश्वासों की बुनियाद है। इस दृष्टि से इस बार का चुनाव कठिन है क्योंकि जनगण की निर्णायक-मानसिकता बिलकुल बदली हुई है और इस बार इनमें शामिल हैं हमारी अगली कतार के लगभग 16 करोड़ मताधिकार सम्पन्न 18 वर्षीय नौजवान। इलेक्ट्रॉनिक-संसाधनों से लैस यह युवा-वर्ग पहली बार अपने अधिकार का उपयोग करेगा। अपनी-अपनी सामाजिक, पारिवारिक पृष्ठभूमि में संघर्षों के बीच लिखते-पढ़ते, बढ़ते हुए इस वर्ग की अपनी सोच है, प्रतिबद्धताएँ हैं और वह निराश है नेताओं के चरित्र से, शासन-प्रशासन की कारगुज़ारियों से। विगत दस वर्षों में 14-15वीं संसद की उपलब्धियों, नाकामियों, भ्रष्टाचारों, घोटालों के साथ लगातार बढ़ती महँगाइयों के दबावों से आज़िज सवा-सौ करोड़ जन-गण खूब समझते हैं वादों-प्रलोभनों के दाँवपेंच/'चाय' और 'चौपाल' की चालाकियाँ। फिलहाल जन-गण के मन में जागृत हो चुका है लोकतंत्र का 'अधिनायक' जो मेले में चुनावी-चकल्लस का मजा लूट रहा है।

एक मेले से दूसरे मेले में संक्रमण के बावजूद समय ठहरा हुआ है, चिड़ियाँ चहचहा रही हैं, बच्चों की किलकारियाँ गूँज रही हैं। 'किड्स बबल' से हटकर बाल-साहित्य के पैवेलियन में बच्चे कविता-पाठ सुन रहे हैं यहीं मैं भी शामिल हो जाता हूँ बच्चों में। किसी कविता में चिड़िया के खोने की वेदना मैंने बच्चों की डबडबायी आँखों में देखी। लगा कि अभी मरी नहीं जीवित हैं संवेदनाएँ, शिशु मन में संजीवित हैं स्मृति-बिम्ब और सार्थक है साहित्य।

इन्हीं शब्दों के साथ नव-संवत्सर का अभिषिंचन करते हुए हम 16वीं लोकसभा के लोकपर्व के अवसर पर जन-गण का अभिनन्दन करते हैं। हमें आशा है कि गुमशुदा चिड़िया वापस आयेगी। इसी विश्वास के साथ गुनगुनाने लगता है कवि-मन.....!

आयेगी वापस चिड़िया
फुदक-फुदक कर आँगन में
चुगेगी दाने,
घोंसले बनायेगी वृक्षों पर।
. . . . . .

सर्वेक्षण

● **अनर्गल-बौद्धिकता :** विश्व पुस्तक मेले के आगाज़ के पहले ही भारतीय संस्कृति पर बौद्धिक-हमला करने वालों की जहरीली गाज़ गिरी। जमकर विरोध हुआ। हमारी सहिष्णुता पर प्रश्नचिह्न लगाये गये। अंतत: अंग्रेजी भाषा के प्रतिष्ठित प्रकाशन 'पेंग्विन' को वेंडी डोनिगर की नई किताब 'दि हिंदूज़ : एन एल्टरनेटिव हिस्ट्री' के आगामी प्रकाशन पर रोक लगानी पड़ी और तमाम प्रकाशित प्रतियों को रद्दी घोषित करते हुए वापस लेना पड़ा। समझ में नहीं आता कि बार-बार इस किस्म की अनर्गल-बौद्धिकता कहाँ पनपती है जिसके ज़रिये जब-तब भारतीय जीवन-मूल्यों परम्पराओं और जातीय-संस्कृति पर आक्रमण किये जाते हैं एवं प्रतिकार करने पर हमारी सहिष्णुता को कोसा जाता है। लगता है कि कुछ बिके हुए भारतीयों द्वारा ही प्रेरित किया जाता है ऐसा जहरीला आक्रमण। हमें इन ग़द्दारों को पहचानना होगा।

● **अभ्युदय और पतन :** अनशन, आन्दोलन और लोक लुभावन वादों की बिना पर कुछ लोगों ने दिल्ली-विधानसभा के चुनाव जीते, सरकार बनायी। किन्तु जन-समस्याओं का निराकरण करने के बजाय सरकार के मुखिया ही कानून का उल्लंघन करते हुए प्रतिबन्धित क्षेत्र में धरने पर बैठ गये। अंतत: अपने ही अंतर्विरोधों के चलते उनकी सरकार का पतन हो गया। अब वहाँ राष्ट्रपति-शासन लागू है। आप कितने भी निष्ठावान, ईमानदार हैं किन्तु अराजक-मानसिकता लेकर राजतंत्र को संचालित करने आये हैं तो आप से तौबा!

● **गत-आगत-स्वागत :** पिछले दिनों हमारी चुनी हुई 15वीं लोकसभा का समापन हुआ और नियमानुसार 16वीं लोकसभा के चुनाव की तारीख भी घोषित कर दी गयी। 14वीं और 15वीं लोकसभा का राजनयिक-विश्लेषण सरकारी-विद्रूप का चित्र ही प्रस्तुत करता है। अपने सांसदों के आचरण की वजह से यह सरकार बार-बार शर्मिन्दा हुई और आखिरी दिनों में तो संसदीय-मर्यादा को तार-तार होते हुए देश ने और दुनिया ने देखा। अब 16वीं लोकसभा के चुनाव आसन्न हैं, रणक्षेत्र में मौजूद हैं लोकतंत्र के महारथी। इनमें जो भी जीतेगा, सरकार बनायेगा। चुने गये सांसदों से हमारी अपेक्षा सिर्फ इतनी है कि विभिन्न विषयों, नीतियों पर पक्ष-विपक्ष के बीच तर्कपूर्ण बहस हो, निर्णय-परक विमर्श हो न कि हाथापाई, छीन-झपट या हुल्लड़-हंगामा!

ख़ैर मक़दम करेंगे हम उनका
सदाक़त हो जिनमें तहजीब की।

—परागकुमार मोदी

22वाँ विश्व पुस्तक मेला

ऐसा क्या है कि पुस्तक मेले का आकर्षण बना हुआ है? भले ही आज पुरानी किताबों को सहेजना आसान हो गया है, भले ही आपके लैपटॉप में हजारों किताबों की सॉफ्ट कॉपी पड़ी हो। किताब की सही जगह किताबखानों में नहीं, अलमारी में नहीं, हैंडबैग में नहीं, कहीं और है। जिस कातिब-ए-तकदीर ने हमारी जिन्दगी की किताब लिखी है, उसने हमें किसी राह पर, किसी मोड़ पर, किसी सुनसान सड़क के अँधेरे कोने में हाथों को पकड़कर दरवेश की तरह बताया है कि किताब दिल और दिमाग की वह मौसिकी है, जिसकी इबारत में जन्नत का मजा छिपा है। उससे इश्क करना अपनी तकदीर के पन्ने पलटने की तदबीर है किताबों से रू-ब-रू होने की तमन्ना हमें ऐसे मेले में खींच लाती है। पुस्तक मेले में नजर उठाकर देखें, कितनी बड़ी दुनिया है, कैसी झलक आती है?

नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन द्वारा विगत 15 फरवरी से 23 फरवरी 2014 के बीच 22वें 'विश्व पुस्तक मेला' का आयोजन किया गया। इस विशाल आयोजन में लगभग सभी भारतीय भाषाओं के साथ विश्व की कई भाषाओं के लेखक, प्रकाशक, वितरक एवं सांस्कृतिक कलाकार एकत्र हुए।

पुस्तक-मेले की परम्परा के अनुसार इस वर्ष अतिथि-राष्ट्र के तौर पर आमंत्रित देश था पोलैण्ड और मेले की थीम रखी गयी थी 'कथासागर : बाल साहित्य का महोत्सव'।

मेले के पहले दिन 15 फरवरी को 22वें विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने किया। आरम्भिक औपचारिकताओं के बाद अपने सम्बोधन में राष्ट्रपति ने कहा—''इंटरनेट के युग में भी किताबों की अहमियत बनी रहेगी। क्योंकि किताब पढ़ने की आदत हमारी सभ्यता में निहित है। इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी कभी भी छपी हुई पुस्तकों का स्थान नहीं ले सकती है। कोई भी सभ्य समाज बच्चों के लिए सार्थक लेखन के बिना विकसित नहीं हो सकता, इसीलिए रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा प्रेमचंद जैसे अनेक लेखकों ने भी बच्चों के लिए भी लिखा है।'' राष्ट्रपति ने भारत को बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र बताते हुए कहा कि यहाँ हर धर्म व सम्प्रदाय के लिए समान स्थान है और यही भारत राष्ट्र की अवधारणा है। इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृति मंत्री चंद्रकुमारी कटोच, पोलैंड की विदेश मंत्री कैटरीना कैमरशचेक व अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक रस्किन बांड भी उपस्थित थे।

अतिथि देश पोलैंड की विदेश मन्त्री ने इस अवसर पर कहा कि पोलैंड के लिए भारत दूसरे घर जैसा है, क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत ने हमारे 500 यतीम बच्चों को पनाह दी थी। भारत-पोलैंड की मैत्री के 60 वर्ष पूरा होने पर इस बार पुस्तक मेले में पोलैंड को मेहमान देश बनाया गया है।

कुल नौ दिन चले इस मेले में 2000 से ज्यादा स्टॉल लगाये गये थे जिन पर 1200 से ज्यादा भारतीय और 25 विदेशी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध थीं। एक अनुमान के अनुसार नौ दिवसीय आयोजन में करीब 10 लाख लोगों ने हिस्सेदारी की और 15 करोड़ से ज्यादा का कारोबार हुआ। अकेले नेशनल बुक ट्रस्ट ने ही 50 लाख रुपये का व्यवसाय किया। इलेक्ट्रॉनिक-माध्यम के इस युग में प्रिण्ट-माध्यम के लिए यह एक शुभ संकेत है। अगले वर्ष के लिए मेले की तिथि निर्धारित की गयी है—14 से 22 फरवरी, 2015। हमें भी इन्तजार रहेगा—

खिर्द के पास खबर के सिवा कुछ और नहीं
तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं।
हर मुकाम से आगे मुकाम है तेरा
हयात जौक-ए-सफर के सिवा कुछ और नहीं।

—सम्पादक

और लेखक खो गया

उस दिन पहली बार मैंने साहित्य का 'वजन' जाना और मैं 'सुखद अचरज' से भर गया।

मेले की नहीं थी, मेरी थी। मेले के आते ही मैं अपने को पढ़ा-लिखा आदमी समझने लगता हूँ। इसी गलती ने मुझे मेले की ओर धकेल दिया। बरसों से ऐसी सूक्तियाँ सुनता आ रहा था कि 'साहित्य को जनता से जोड़ा जाना चाहिए' और 'किताब को पाठकों से जोड़े बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता।'

मैं उन विरले लेखकों में से हूँ, जो समाज को हर समय आगे बढ़ते देखना चाहते हैं और किताब को पाठक तक पहुँचते देखना चाहते हैं। खबरों ने बार-बार कहा कि धिक्कार है तुझे। अगर खुद को पढ़ा-लिखा सिद्ध करना है और साहित्य में कुछ बनना है, तो मेले में जाकर दिखा। बाकी दिन तुझे लोग पढ़ा-लिखा न मानें, लेकिन अगर मेले में गया, तो जरूर पढ़ा-लिखा मान लिया जाएगा। मैं मेले में चला गया और तब जाकर साहित्य का असली मर्म समझा।

मेले में जाकर मुझे पहली बार यह मालूम हुआ कि साहित्य का अपना वजन होता है और जो उस वजन को उठा सकता है, वह 'ब्रह्माण्ड' को 'कंदुक इव' उठा सकता है। मैं खाली हाथ मेले के अन्दर गया था लेकिन जब बाहर आया, तो मेरे दोनों ही हाथ भरे थे। दोनों हाथ साहित्य के वजन से दुख रहे थे। लेकिन मैं फिर भी मुस्कराए जा रहा था।

इसी को मैं 'सुखद अचरज' कह रहा हूँ। आखिर दुखद को सुखद कहना ही तो साहित्य होता है।

भगवान झूठ न बुलवाए। मेले में मेरे दुख लगभग दो किलोमीटर लम्बे रहे होंगे। मैं ज्यों ही मेले में प्रविष्ट हुआ, त्यों ही लेखकों से अपना एनकाउंटर होने लगा। मेले में सब लेखक एक जैसे हो जाते हैं। हर लेखक लोकार्पण में लिप्त पाया जाता है। एक कहता था कि मेरा लोकार्पण होने वाला है, आप जरूर देखने आएँ। दूसरा कहता था कि मेरी पाँच किताबें ठीक पाँच बजे लोकार्पित होने वाली हैं, आपके बिना लोकार्पण अधूरा रहेगा।

मेरी मतलबी आँखें तो अपनी ही पुस्तकें सर्वत्र देखना चाहती थीं और मेरे प्रकाशक ने मेरी किताबों के ऊपर दूसरे लेखकों की किताबों को चढ़ाने की बदमाशी की हुई थी। मेरा मन कर रहा था कि हाथ बढ़ाकर दूसरों की घटिया किताबों को पीछे करके अपनी बढ़िया किताबों को आगे लगा दूँ, ताकि पाठक उनसे सीधे जुड़ सकें। लेकिन दुर्भाग्य कि मेरे हाथों ने उठने से उन्होंने विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया। उनका भी क्या कसूर? लोकार्पणवादियों ने मेरे दोनों हाथों में करीब पांच किलो वजन का साहित्य समर्पित कर दिया था, जिसे उठाए-उठाए खुद को सार्त्र और कामू से ऊँचा समझ इतराता फिर रहा था। इसे कहते हैं 'दो हाथ और बारह किताबें!'

साहित्य का मारा मैं मुस्कराने के अलावा कर भी क्या सकता था? साहित्य मेरे हाथों में इस कदर जुड़ा था कि उससे पिंड छुड़ाना काफी मुश्किल था। तभी माइक पर आवाज आने लगी—पुस्तक मेले में एक लेखक खो गया है, जिसका रंग गेहुंआ, कद औसत, कुरता-जाकिट और धोती पहने हुए है। पान का पुराना शौकीन लगता है। उसके हाथ में घंटी है, जिसे बजा-बजाकर वह 'लोकार्पण करा लो, लोकार्पण करा लो' चिल्लाता फिरता है। वह यह भी कहता फिरता है कि जिनकी किताबें अभी नहीं आई हैं, वे भी लोकार्पण करा सकते हैं। उसके छूट भागने से मेले में अफरा-तफरी का माहौल फैल गया है। कृपया शांति बनाए रखें। अगर यह लेखक किसी को कहीं मिले, तो उसे सिक्यूरिटी डेस्क के पास जमा कर दें।

मैं अपना सारा दुख भूल गया और साहित्य के वजन को पास के डस्टबिन में डालकर उसे ढूंढ़ने निकल गया।

—सुधीश पचौरी (हिन्दी साहित्यकार)

'हिन्दुस्तान' से साभार

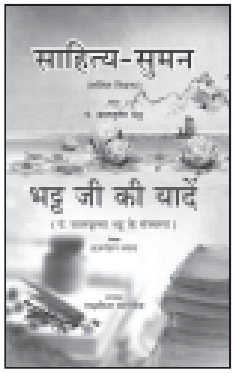

आकार डिमाई

पृष्ठ 192

सजिल्द : 978-93-5146-050-3 • रु. 350.00
अजिल्द : 978-93-5146-051-0 • रु. 130.00

साहित्य-सुमन

(पं० बालकृष्ण भट्ट के रसीले लेखों का संग्रह)

भट्टजी की यादें

(पं० बालकृष्ण भट्टजी के संस्मरण)

पं० बालकृष्ण भट्ट ■ ब्रजमोहन व्यास

सम्पादक : **लक्ष्मीधर मालवीय**

इस पुस्तक माला में साहित्य और नीति सम्बन्धी सब 25 लेख के गुच्छे चुन-चुन के सजाये गये हैं। भट्टजी के स्वसम्पादित 32 साल के 'हिन्दी प्रदीप' में स्थान-स्थान पर ये लेख जगमगा चुके हैं। पर इनकी तरोताज़गी, चटकीलेपन और रसीलेपन में कहीं से भी बासीपन की गंध नहीं झलकती। भट्टजी के रसीले पाठक जब ही इनका स्वाद चक्खेंगे कहीं से भी सुगन्ध की कमी इनमें न पावेंगे।... साथ ही इस पुस्तक में शामिल हैं पं० ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखे गए भट्टजी के संस्मरण जो सरस्वती पत्रिका में जून 1958 से लेकर जून 1959 के अंकों में निकले थे। व्यासजी भट्टजी के जामाता तो बाद में हुए, किशोरावस्था में भट्टजी से उन्होंने संस्कृत पढ़ी थी। अंतरंग परिचय के ये संस्मरण अपने आप में बेजोड़ हैं।

(पुस्तक के एक निबन्ध का अंश)

श्री शंकराचार्य और गुरु नानक देव

ये दोनों हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध पुरुषों में अग्रगण्य और बड़े महात्मा हो गये हैं। पंजाब में जैसे गुरु नानकदेव माननीय हैं वैसा ही दक्षिण तथा महाराष्ट्र देश में श्री शंकराचार्य माने जाते हैं। प्रतिमा पूजन के सिद्धान्तों को काटने वाले और ईश्वर की निर्गुण उपासना के पोषक दोनों थे। किन्तु शंकराचार्य जाति के ब्राह्मण थे, इसलिए ब्राह्मणों के उसकाने से, जिसमें ब्राह्मणों की जीविका में बाधा न पहुंचे, पंचायतनपूजा अर्थात् विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति की पूजा और आराधना फिर से स्थापित की और बौद्धों को इस देश से निकलवा दिया। इसके विरुद्ध नानकशाह ने ब्राह्मणों का जोर बहुत ही बहुत तोड़ा और नाम के माहात्म्य को अधिकाधिक बढ़ाया। सच भी है, नाम संकीर्तन में लगा हुआ, चित्त का शुद्ध सीधा सादा मनुष्य कुटिलचित्त, त्रिवेदज्ञ ब्राह्मण से श्रेष्ठ है। शंकर पूर्ण विद्वान् तथा वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक थे। ये उस समय हुए जब मुसलमानों का ज़ोर न बढ़ने से संस्कृत का पठन पाठन देश में पूरी तरह जारी था और देश के हर एक प्रान्त में मंडन मिश्र के से नामी पण्डित विद्यमान् थे। उस समय शंकर ही का सा विद्वान् प्रतिष्ठा पा सकता और सर्वग्राह्य हो सकता था। दूसरे यह कि बौद्ध लोग, जिनके मुकाबिले शंकराचार्य उठ खड़े हुए, बड़े दार्शनिक थे। शङ्कर ही का सा सुयोग्य पण्डित उनसे पार पा सकता था। इधर नानक जिस समय और जिस देश में हुए उस समय और उस देश में मुसलमानों का बड़ा अत्याचार था; चाल चलन, रीति बर्ताव, रहन सहन लोगों का यावनिक हो गया था। बोली और पहनावे तक में मुसलमानी छा गई थी। उस समय संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने से कहीं सरोकार न रह गया था। संस्कृत की जगह लोग अरबी फ़ारसी के बड़े मुल्ला और आलिम होने लगे। ऐसे समय नानक ही ऐसे अल्पविद्य किन्तु कुशाग्रबुद्धि का काम था कि वे खान पान के अनेक आचार विचार पर ध्यान न दे एक निर्गुण की उपासना के द्वारा हिन्दू और मुसलमान दोनों को एक करें। आपस की सहानुभूति और हमदर्दी लोगों में आजाने की बहुत कुछ उन्होंने चेष्टा की। उसी समय के लगभग जैसा बङ्गाल में कृष्णचैतन्य महाप्रभु भक्ति और परस्पर के प्रेम के पोषक हो रहे थे और जाति पांति के झगड़े को तोड़ रहे थे वैसा ही पंजाब में गुरु नानक ने जाति पांति को फूट की बुनियाद समझ वर्ण-विवेक को यहां तक घटाया कि हिन्दू मुसलमान दोनों को एक कर दिया। हिन्दुस्तान के दो प्रान्त बङ्गाल और पंजाब जो कुछ कुछ आगे को बढ़ रहे हैं यह महाप्रभु कृष्णचैतन्य और गुरु नानक इन्हीं दो महात्माओं के उपदेश का फल है। सारांश यह कि नानक यद्यपि शंकर के से विद्वान् न थे किन्तु चरित्र की पवित्रता, सौजन्य, आस्तिक्य-बुद्धि में शंकर से किसी अंश में कम न थे।

अब देखना चाहिये कि राजनैतिक विषयों में और मुल्की मामलों में इन दोनों के उपदेश और शिक्षा का क्या फल हुआ। शंकर ने बौद्धों को यहां से निकाल शासन की स्थिर शैली में बड़ी खलबली मचा दी और बहुत चाहा कि भारत फिर वैसा ही हो जाय जैसा वैदिक ऋषियों के समय में था, किन्तु भारत सो न होकर आधा तीतर आधा बटेर सा हो गया। अब इस समय हम लोगों में कर्मकाण्ड-कलाप और यज्ञोपवीत, विवाह आदि की जो पद्धतियां प्रचलित हैं वे सब उस समय की बनी हैं जब शंकर ने हिन्दुस्तान को बौद्धों के हाथ से छुटा कर इसका पुनः संस्कार किया और ब्राह्मणों को फिर पूरी ताकत मिली। बौद्धों के उच्छिन्न हो जाने से अपनी मनमानी करने में उनकी रोक टोक करने वाला अब कोई न रहा। दूसरे शैव और वैष्णवों का ऐसा विरोध बढ़ा कि फूट को फैलने के लिये पूरा मौका और स्थान मिल गया। इसका फल यही हुआ कि मुल्क में अब तक इतनी कमज़ोरी छाई हुई है कि अंगरेज़ी शासन की शान्ति और अंगरेज़ी शिक्षा के प्रचार से भी लोगों के कुसंस्कार बदलते ही नहीं। संशोधन का बीज जमने में वही बात याद आती है कि "जनम का कोढ़ कहीं एक एतवार से दूर हुआ है"।

शंकर तथा रामानुज न हुये होते तो मुसल्मानों को यहां कदम ज़माने में इतनी सुगमता न होती और न मुल्क में इतनी कमज़ोरी फैल जाती। सब से बड़ी हानि शंकर से वेदान्त दर्शन को हुई जिसके सिद्धान्त बदल कर और के और हो गये। वेदान्त के प्रवर्तक व्यासदेव का प्रयोजन वेदान्त सूत्रों के बनाने का कुछ और ही था। शंकर उन्हें और ही मतलब पर झुका लाये। व्यासदेव का यह कभी तात्पर्य वेदान्त के प्रचलित करने से न था कि इस प्रकार अकर्मण्यता देश में छा जाय और संसार को मिथ्या मान हम स्वयं ब्रह्म बन बैठें। वरंच उनका तात्पर्य यह था कि हम सुख दुःख को एकसा समझ अपना काम करने में न चूकें तथा स्थिर अध्यवसाय, दृढ़ निश्चय, व्यवसायात्मिका बुद्धि को चित्त में हर समय अवकाश देते रहैं दुःख में घबड़ा न उठैं और सुख में मारे घमण्ड के फूल न जायं, संसार को स्थिर अनश्वर मान कर्मयोग में सदा लगे रहैं इत्यादि। गुरु नानक ..... बुद्धिमान् ने इन सब बातों को सोच विचार कबीर के सिद्धान्तों को विशेष आदर दिया। किसी एक ख़ास मज़हब या धर्म में जकड़े रहना राजनैतिक तरक्की का बड़ा बाधक है।.....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

बदलाव के सूत्रधार

कलम की धार से बदलाव के सूत्र गढ़े और बदलाव के सूत्रधार हो गए। पत्रकारिता में पांच दशक लेकिन आज के इस हाल पर गहरा मलाल। हम बात कर रहे हैं वयोवृद्ध पत्रकार पारसनाथ सिंह की। पूर्वांचल में सूखे पर जिनकी रिपोर्ट ने सरकार हिलाकर रख दी थी। अन्ततः केन्द्र सरकार को स्पेशल पैकेज की घोषणा करनी पड़ी थी।

बेशक बाबू विष्णुराव पराड़कर जी का दर्जा बेहद ऊँचा पत्रकारिता के मानक के तौर पर देखा जाता है। आज वह हमारे बीच नहीं लेकिन बाबू पारसनाथ सिंह को उनकी परम्परा का संवाहक कहने से किसी को गुरेज नहीं हो सकता। उन्होंने परतन्त्रता के दौर में पत्रकारिता शुरू की और उसका दर्द उनकी लेखनी से टपकता था। उन्होंने आजादी के बाद तक के मिलाकर पाँच दशक इस क्षेत्र में बिताए। उन्हें जानने वाले बताते हैं कि विशेष प्रतिनिधि की परम्परा उन्हीं से शुरू हुई। उन्हें यह जिम्मेदारी देकर दिल्ली, संसद की रिपोर्टिंग के लिए भेजा गया था। फिलहाल 96 वर्ष के पारसनाथ सिंह वाराणसी के गायघाट में अपना घर होते हुए भी बिहार के पटना जिला स्थित पैतृक गाँव तारनपुर में रहते हैं। आज भी किताबें पढ़ने का शौक जिसे वह बिना चश्मा लगाए पूरा करते हैं।

मन आया तो कलम से कागजों पर धार धरते हैं। हालांकि यह आम नहीं बेहद खास होता है केवल अपने लिए और बेहद अपनों के लिए।

महुआ माजी बनीं झारखण्ड राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष

चर्चित उपन्यासकार-कथाकार महुआ माजी को झारखण्ड महिला आयोग का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। निकट अतीत में अस्तित्व में आए झारखण्ड राज्य के महिला आयोग की वे तीसरी अध्यक्ष बनी हैं।

उपन्यासों तथा कई कहानियों के लिए चर्चित, पुरस्कृत महुआ माजी के अनुसार उनका समाज-शास्त्री तथा लेखक होना इस पद पर सुचारु ढंग से काम करने में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है।

पश्चिम बंगाल में हिन्दी दूसरी सरकारी भाषा

पश्चिम बंगाल में हिन्दी को दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा प्राप्त हो गया है। राज्य सरकार ने वेस्ट बंगाल आफिशियल लैंग्वेज (सेकेंड) ऐमंडमेंट बिल, 2012 पारित कर राज्य के 10 प्रतिशत से अधिक हिन्दीभाषी आबादी वाले क्षेत्रों में हिन्दी को दूसरी सरकारी भाषा के रूप में मान्यता दे दी है। राज्य में उर्दू, बांग्ला, संथाली, उड़िया और पंजबी को भी दूसरी सरकारी भाषा के रूप में मान्यता मिल गई है।

चेहरे के मनोभाव पढ़ लेगा सॉफ्टवेयर

अमेरिकी कम्पनी ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित किया है जो मनुष्य के चेहरे के मनोभावों को पढ़कर बता सकेगा कि कोई व्यक्ति कैसा महसूस कर रहा है। सॉफ्टवेयर यह भी बता सकेगा कि कोई व्यक्ति झूठी हंसी हँस रहा है। फेसेट नाम के इस सॉफ्टवेयर में हँसी, दुख, गुस्से, भय जैसे सातों तरह के मनोभावों का पता लगाने के लिए एक सामान्य डिजिटल कैमरे का इस्तेमाल किया गया है।

कैलिफोर्निया स्थित कम्पनी इमोशेंट के सह संस्थापक व प्रमुख शोधकर्ता मरियान बार्टलेट ने बताया, आमतौर पर लोगों के कहने, करने और सोचने में काफी अन्तर होता है। वे कहते कुछ हैं, सोचते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

नौ वर्षीया ने सात महीनों में पढ़ी 364 किताबें!

ब्रिटेन में एक नौ साल की पढ़ाकू लड़की ने ऐसा कारनामा कर दिखाया है जिसे जानकर आप चकित हो जाएंगे। वह महज सात महीनों में ही अविश्वसनीयरूप से 364 किताबें पढ़ चुकी है।

डेली एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, चेशायर के एश्ले में रहने वाली फेथ जैक्शन खुद को टेलीविजन कम्प्यूटर गेम से दूर रखती है। वह इनकी जगह रोआल्ड दाल्ह या हैरी पॉटर को पढ़ना ज्यादा पसन्द करती है। उसे किताबों से बेहद लगाव है। जब वह प्राइमरी स्कूल में थी तब शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर उसमें किताबों के प्रति प्रेम बढ़ा।

सबसे महँगी पाण्डुलिपि

पुनर्जागरण काल में मोनालिसा की अमर कृति बनाने वाले लियोनार्डो द विंची जीवनभर अपने अनुभवों, चिंतन और स्केचेस का अपने शोधपत्रों में संग्रह करते रहे। इन मूल्यवान रचनाओं में से सिर्फ 30 ही शेष बची हैं। उनकी इन्हीं सुप्रसिद्ध कृतियों में से एक थी कोडेक्स हैमर। यह कृति एक कुलीन वर्ग के ब्रिटिश व्यक्ति के नाम पर थी, जिन्होंने 1717 में 72 पन्नों के इस शोधपत्र को हासिल कर लिया। हालांकि तीन साल बाद धनी व्यवसायी बिल गेट्स ने इस ऐतिहासिक दस्तावेज को खरीद लिया और इसकी स्कैन की गई डिजिटल प्रति रिलीज की, ताकि पूरी दुनिया इसका फायदा उठा सके।

लाइब्रेरी ऑन मोबाइल

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में साइबर लाइब्रेरी की सुविधा की उपलब्धता के बाद अब विश्वविद्यालय की नजर 'लाइब्रेरी ऑन मोबाइल' वातावरण विकसित करने पर है। अगले सत्र से इसके शुरू हो जाने की भी सम्भावना है।

इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को एक कोड दिया जाएगा जिसके प्रयोग से वे अपने मोबाइल पर केन्द्रीय ग्रन्थालय में उपलब्ध पुस्तकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

रांची विश्वविद्यालय के नये कुलपति

विधि संकाय (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के अध्यक्ष प्रो० बी०सी० निर्मल को यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज एण्ड रिसर्च इन लॉ, रांची का कुलपति बनाया गया है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जुड़े तीन प्रोफेसर बिहार में बनाए गए कुलपति

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध तीन प्रोफेसरों को बिहार के तीन विश्वविद्यालयों का कुलपति बनाया गया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे प्रो० वाइ०सी० सिम्हाद्री को पटना विश्वविद्यालय, जैव रसायन विभाग के प्रो० रमाशंकर दुबे को तिलका मांझी विश्वविद्यालय, भागलपुर तथा कृषि विज्ञान संस्थान के प्रो० साकेत कुशवाहा को दरभंगा विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया है।

भारतीय रंग में शेक्सपियर के नाटक

विदेश में शेक्सपियर के नाटक भारतीय रंग में दिखेंगे। विदेशी थिएटर कलाकारों का मानना है कि दुनिया की अन्य सभ्यताएँ नष्ट हो चुकी हैं, पर भारतीय सभ्यता अभी भी सनातन रूप में मौजूद है। ऐसे में शेक्सपियर के नाटक को भारतीय कलेवर देने से ये नई पीढ़ी तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच सकेंगे।

सिंगापुर का 'द रिपर्टरी थिएटर' शेक्सपियर के नाटकों में एक तरफ जहाँ भारतीय कलाकारों से अभिनय कराएगा, वहीं इसमें भारतीय सभ्यता की झलक भी बिखेरेगा। थिएटर के प्रबन्ध निदेशक गौरव कृपलानी का कहना है कि दुनिया भर में केवल भारतीय सभ्यता ही है, जो आज भी सनातन रूप में मौजूद है। शेक्सपियर के नाटकों को भारतीय रंग में रंगकर हम इसकी पहुँच का दायरा बढ़ा सकते हैं। थिएटर की कार्यकारी निदेशक कॉर्लोटे नोर्स का कहना है कि हम शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' को भारतीय रूप देने की शुरुआत कर रहे हैं।

फ्रांसीसी महिला ने लिखा 'बनारस'

फ्रांसीसी महिला मिरिली जॉस्फिन ग्यूजिनेक ने वर्षों के बनारस भ्रमण के बाद शहर का इतने करीब से अध्ययन किया और जाना-समझा कि कई बनारसी भी वह तथ्य जानकर हैरान रह गए। मिरिली ने अपने अनुभवों को एक पुस्तक का रूप दिया। बेहतरीन तस्वीरों में बनारस की गंगा, घाट, गलियाँ, मन्दिर, कलाकारी, रहन-सहन, पूजन-अर्चन, ऐतिहासिक व पुरातात्विक धरोहरों वगैरह-वगैरह सब कछ कैद करते हुए उनके बारे में अपने अनुभव लिखे हैं।

पुस्तक का नाम है 'बनारस, काशी-

वाराणसी'। पुरातन से लेकर धार्मिक व आधुनिक सभी पक्ष को समेटे हुए फ्रेंच में लिखी अपनी पुस्तक को मिरिली ने वाराणसी के महापौर रामगोपाल मोहले को भेंट किया।

सौ किताबें लिखने वाला सांसद

चार बार (1964 से 1979 तक) सांसद रहे श्री मधु लिमये की पहचान एक पार्लियामेंटेरियन से ज्यादा समाजवादी विचारक, लेखक और आन्दोलनकारी की रही। उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी और मराठी में सौ किताबें लिखीं। उन्होंने 1955 में गोवा मुक्ति आन्दोलन के दौरान 12 साल जेल में गुजारे। इनमें 19 महीने तो वह पुर्तगालियों के कब्जे में रहे। उन्होंने इस आन्दोलन और जेल से जुड़े संस्मरण लिखे हैं जो पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध हैं।

अरविंद ने बनाया नया कीर्तिमान

देहरादून। ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय के शिक्षक अरविंद मिश्रा ने लगातार 139 घण्टे, 49 मिनट और 42 सेकेंड पढ़ाने का नया विश्व कीर्तिमान रचा है। उनकी इस उपलब्धि पर अभी गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की मुहर लगनी बाकी है। विश्वविद्यालय में एक मार्च से लगातार पढ़ा रहे मिश्रा के स्वास्थ्य में गिरावट आने लगी थी। जिसके बाद उन्होंने अपना लेक्चर समाप्त कर दिया। अरविन्द ने न सिर्फ पोलैण्ड के इरॉल मुझावाजी के लगातार 121 घण्टे पढ़ाने के रिकार्ड को ध्वस्त किया, बल्कि इससे 18 घण्टे 42 मिनट और 39 सेकेंड आगे निकल एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

नालंदा विश्वविद्यालय में सितम्बर से शुरू होगी पढ़ाई

नालंदा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में आगामी सितम्बर माह में पढ़ाई शुरू हो जाएगी। फिलहाल स्कूल ऑफ हिस्ट्री व स्कूल ऑफ इन्वायरन्मेंटल इकोलॉजी की पढ़ाई शुरू की जाएगी। प्रत्येक स्कूल में दस फैकॅल्टी की नियुक्ति होगी। इसके लिए नालंदा विश्वविद्यालय के गवर्निंग बोर्ड ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आवेदन आमन्त्रित किया था। जिसमें बोर्ड के पास कुल 500 शिक्षाविदों ने आवेदन दिए हैं। इनमें 130 विदेशी विद्वानों ने भी पढ़ाने में दिलचस्पी दिखायी है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के चांसलर प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने दी।

महात्मा गाँधी वि०वि०, वर्धा के नए कुलपति

गोरखपुर, इलाहाबाद, भोपाल और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन के साथ अमेरिका-यूरोप के कई विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे गिरीश्वर मिश्र को महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का नया कुलपति नियुक्त किया गया है। उन्होंने पदभार ग्रहण कर लिया है। वाराणसी से विशेष जुड़ाव रखने वाले मिश्र जाने-माने चिंतक, साहित्यकार और पत्रकार स्व० विद्यानिवास मिश्र के अनुज हैं।

प्रोफेसर ने तोड़ा 78 घण्टे पढ़ाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड

मध्य प्रदेश के भिंड में प्रोफेसर मोहित दुबे ने बेंगलूर के कथिरवान एमपेथी का 78 घण्टे तीन मिनट लगातार पढ़ाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड विगत दिनों तोड़ दिया। यह लांगेस्ट अटेंडेड श्रेणी का है।

भारतीय मूल के छात्र ने जीती स्पेलिंग प्रतियोगिता

अमेरिका की प्रतिष्ठित स्पेलिंग बी प्रतियोगिता जीतने के साथ ही भारतीय मेधा ने फिर बुद्धिमता का परचम लहरा दिया। 13 वर्षीय छात्र कुश शर्मा ने ऐतिहासिक 95 राउंड्स तक चली स्पेलिंग बी प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम कर लिया। फ्रंटियर स्कूल ऑफ इनोवेशन में सातवीं कक्षा के पढ़ने वाले शर्मा ने 'डेफिनेशन' (परिभाषा) की सही स्पेलिंग बताकर मिसौरी में 'जैक्सन काउंटी स्पेलिंग बी' का खिताब जीत लिया। इसके साथ ही उसने आगामी मई में वाशिंगटन में आयोजित होने वाली 'स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी' प्रतियोगिता में जगह पक्की कर ली है।

भारतीय छात्र ने बनाया सस्ता ब्रेल प्रिंटर

अमेरिका में भारतीय मूल के 12 वर्षीय छात्र शुभम बनर्जी ने कम लागत वाला ब्रेल प्रिंटर 'ब्रेगो' तैयार किया है। कैलिफोर्निया के सांता क्लारा में सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले शुभम ने इसे एक खिलौने 'लेगो माइंडस्टॉर्म्स इवी3 सेट' की मदद से तैयार किया है। लेगो कम्पनी के इस सेट की कीमत 349 डॉलर (करीब 21 हजार 680 रुपये) है। ब्रेगो बनाने में कुछ अन्य सामग्री इस्तेमाल करने के कारण शुभम के इस प्रिंटर की कीमत करीब 350 डॉलर बैठती है, जो अन्य ब्रेल प्रिंटर की तुलना में कम है। बाजार में मौजूद अन्य ब्रेल प्रिंटरों की खुदरा कीमत 2000 डॉलर (करीब सवा लाख रुपये) है।

पाक ग्रन्थागार में संस्कृत-हिन्दी की 8671 पाण्डुलिपि

धर्माचार्य और इतिहासवेत्ता जानते हैं कि पाकिस्तान के लाहौर शहर को भगवान राम के पुत्र लव ने बसाया था। वहाँ सनातन धर्मियों ने हजारों साल तक वैष्णव धर्म का झण्डा फहराया। प्रमाणस्वरूप लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय में 8671 संस्कृत-हिन्दी की पाण्डुलिपियाँ पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित हैं। हालांकि यहाँ अरबी, फारसी, तुर्की, उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं की कुल बाइस हजार पाण्डुलिपियाँ रखी हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी संस्कृत विभाग के शोध छात्र राजेश सरकार ने इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ जुटाई हैं। वह बताते हैं कि तीन वर्ष पूर्व पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर के मुख्य पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ० हारुन उस्मानी से संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची प्राप्त हुई। इससे उन्हें पता चला कि वहाँ संस्कृत-हिन्दी की पाण्डुलिपियों का भण्डार है।

हिन्दू, मुगल, सिख, पठान एवं ब्रिटिश साम्राज्य की मिश्रित संस्कृति वाला यह नगर कभी आर्य समाज का गढ़ रहा। यहाँ से संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित हुआ और संस्कृत का प्रचार-प्रसार किया गया। संस्कृत और भारत विद्या का सुप्रसिद्ध प्रकाशन मोतीलाल बनारसी दास की स्थापना भी लाहौर में हुई।

लाहौर में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज— स्वामी दयानंद सरस्वती ने वर्ष 1882 ई० में लाहौर में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की। ब्रिटिश सरकार ने उच्च शिक्षा के लिए 1882 ई० में लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसमें 1883 ई० में केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना की, जबकि यहाँ 45 अन्य पुस्तकालय हैं। पुस्तकालय में पाण्डुलिपि विभाग की स्थापना 31 जुलाई 1920 ई० में हुई। मान्यता देने के बाद लाइब्रेरी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दी गई।

किताबें नहीं करेंगी स्त्री-पुरुष में भेद

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद ने अपनी पाठ्य पुस्तकों से ऐसे शब्दों और चित्रों को हटाने का फैसला किया है जिनसे लिंग भेद की बू आती हो। मिल्कमैन, पुलिसमैन जैसे शब्दों की बजाय अब पाठ्यपुस्तकों में मिल्कपर्सन, पुलिसपर्सन जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाएगा।

इस बदलाव पर काम भी शुरू हो गया है। यह बदलाव कक्षा एक से पांच की पाठ्य पुस्तकों में होगा।

प्रेमचंद की कहानियों पर कॉमिक्स

प्रख्यात कहानीकार मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ अब कॉमिक्स के रूप में भी उपलब्ध हैं। अमर चित्र कथा द्वारा विश्व पुस्तक मेले में ये किताबें लांच की गयीं। फिलहाल प्रेमचंद की दो कहानियों 'बूढ़ी काकी' और 'दो बैलों की कथा' पर आधारित कॉमिक्स का प्रकाशन किया गया है।

डॉ० नाग को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय का भी दायित्व

प्रदेश के राज्यपाल बी०एल० जोशी ने महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० पृथ्वीश नाग को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के कुलपति की भी जिम्मेदारी सौंपी है। वह विद्यापीठ के साथ-साथ अगले आदेश तक मुक्त विश्वविद्यालय के दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

स्मृतियों के मील पत्थर

उद्भ्रान्त

'स्मृतियों के मील-पत्थर' हिन्दी के ख्यातनाम वरिष्ठ कवि उद्भ्रांत के संस्मरणों की पहली किताब है जिसमें वे उन महाभाग अग्रज कवियों-कथाकारों को स्मरण करते हैं जिनसे अपनी सृजनयात्रा के प्रारम्भिक चरण में ही प्रभावित होकर सम्पर्क में आये और उनके स्नेहजल से सिंचित होकर साहित्य के क्षेत्र में अपने कदम मजबूती से रखे। सर्वश्री हरिवंशराय बच्चन, अमृतलाल नागर, अज्ञेय, यशपाल, भगवती प्रसाद वाजपेयी, शिवमंगल सिंह सुमन, हरिनारायण व्यास, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, अमृतराय, शिवकुमार मिश्र, वीरेन्द्र मिश्र और रामानंद दोषी पर लिखे गए इन संस्मरणों में लक्ष्य साहित्यकार के जीवन के अनछुए प्रसंग तो थे ही, लेखक के साथ समय-समय पर हुई वार्ताओं के ब्यौरों के कारण उनका अंतरंग भी उभरकर सामने आया था।

आकार डिमाई — *पृष्ठ* 180

सजिल्द : 978-81-89498-70-2 • रु० 350.00
अजिल्द : 978-81-89498-71-9 • रु० 130.00

(पुस्तक की एक संस्मरण का अंश)

अमृत राय

प्रगतिशील लेखकों के बीच अमृतराय की हैसियत क़द्दावर थी। साहित्य के साथ-साथ उनका लम्बा-चौड़ा क़द! 'चौड़ा' शब्द मुहावरे की रक्षार्थ लगाना पड़ा क्योंकि वे लम्बे तो थे मगर चौड़े भी होते तो साहित्यकार नहीं पहलवान लगते। यह भी ध्यान रखें कि अगर वे सिर्फ़ लम्बे होते तो वास्तविक न होकर 'सींकिया' कहे जाते, इन सब कारणों से उनकी शारीरिक बनावट को याद करने के लिए मुझे यह शब्द-युग्म ठीक लगा! सो, लम्बा-चौड़ा, क़द्दावर शरीर, अंग्रेज़ों से होड़ लेती गोराई, लम्बोतरा मुख, बाल सामने से काढ़े हुए और करीने से वस्त्र पहने वे जब किसी कार्यक्रम में दिखाई देते तो साहित्यकार कम स्टेज के कलाकार अधिक मालूम देते थे। जब बोलने खड़े होते तो अपनी बातों को प्रभावी बनाने के लिए उनकी हस्तमुद्राएं, अंग संचालन, आवाज़ का उतार-चढ़ाव उन्हें किसी अभिनेता से कम का दर्ज़ा नहीं देता था। एकदम पीछे की सीटों पर बैठे हम जैसे कुछ शरारती युवा धीरे से ऐसी टिप्पणी करते पाये जा सकते थे—''वाह! क्या दिलीप कुमार स्टायल है!'' अथवा ''दिलीप तो इतना अच्छा अभिनय देख गश खाकर गिर पड़ता!'' आदि, आदि!

यह सब उस समय का युवकोचित हँसी-मज़ाक था, मगर इसमें दो रायें नहीं थीं कि अमृतराय प्रगतिशील आंदोलन की एक जीवंत और महत्त्वपूर्ण उपस्थिति थे। मैंने उन्हें पहले-पहल वर्ष 1970 में हुए अफ्रो-एशियाई लेखक सम्मेलन में देखा था। सम्मेलन का चार्टर निर्मित करने में उनका भी योगदान था। उनके परचे में अनेक ज़रूरी मुद्दे उठाए गए थे।

प्रगतिशील आंदोलन को सुदृढ़ करने के साथ-साथ उनको साहित्यिक पत्रकारिता के लिए भी याद किया जाएगा। प्रेमचंद के 'हंस' को पुनर्जीवित करने का तो उन्होंने प्रयास किया ही, 'नई कहानियाँ' जब लड़खड़ाने लगी तब उसका स्वामित्व लेकर उन्होंने अपने ढँग से कथा-धारा को आगे बढ़ाने में योगदान किया और कमलेश्वर की 'समांतर कहानी' के बरक्स 'सहज कहानी' का नारा बुलंद किया। यद्यपि 'सहज कहानी' कोई ख़ास प्रभाव न छोड़ सकी क्योंकि कमलेश्वर और 'सारिका' के ग्लैमरयुक्त प्रभाव और 'समांतर आंदोलन' में आम आदमी, दलित आदि नये मुद्दों के कारण कथाकारों की नई पीढ़ी उनके साथ नहीं खड़ी हो सकी। फिर भी अपने सम्पादन में दो वर्षों तक 'नई कहानियाँ' निकालते हुए उन्होंने कुछ यादगार कहानियाँ प्रकाशित कीं।

मगर इन सबसे ज़्यादा अमृतराय को प्रेमचंद की जीवनी 'कलम का सिपाही' के लेखक और 'आदि विद्रोही' जैसे उपन्यास के अनुवादक के रूप में अधिक याद किया गया, जिस कारण कथा और आलोचना के क्षेत्र में किये गए उनके मौलिक अवदान पर आलोचकों का यथावश्यक ध्यान नहीं जा सका। अमृतराय को इसकी कसक थी, मगर वे इसका मुख्य कारण प्रेमचंद को मानते थे जिनका व्यक्तित्व साहित्य में एक विशाल वटवृक्ष जैसा था। उन्हें लगता था कि प्रेमचंद का पुत्र होना उनके लेखक के लिए बड़ी त्रासदी था और उनका मूल्यांकन होते ही प्रेमचंद से उनकी तुलना होने लगती थी जोकि सर्वथा अनुचित था। उनके विपुल रचनाकर्म के बावजूद उन्हें 'प्रेमचंद के पुत्र' के रूप में स्मरण करने से उन्हें कष्ट होता था जो उनके जीवन के अंत तक रहा।

लखनऊ में यशपाल और अमृतलाल नागर से उनके अच्छे सम्बंध थे। इनमें भी नागर जी से अधिक आत्मीयता थी जो प्रथम नाम समान होने के कारण उन्हें 'नामाराशी!' कहकर सम्बोधित करते थे और अमृतराय इस सम्बोधन का आनंद लेते थे।

मेरी अमृतराय से मुलाक़ात कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, बाँदा, दिल्ली के कार्यक्रमों में कई बार हुई थी। एक बार इलाहाबाद प्रवास के समय मैं अशोक नगर स्थित उनके आवास पर भी गया। उनका घर महादेवी के घर के पास ही था।

एक बार लखनऊ के किसी समारोह में अमृतराय आये तो मैंने उनसे सवाल-जवाब के लिए समय माँगा। उन दिनों वे 'नई कहानियाँ' संपादित कर रहे थे। ठाकुरप्रसाद सिंह सूचना विभाग के निदेशक थे। बोले—''कल लंच के बाद मेरे कक्ष में आ जाना।''

अगले दिन तय समय पर मैं अमृतराय से मिलने सूचना भवन पहुँचा। वे ठाकुर भाई के कक्ष में मौजूद थे। मेरे कुर्सी पर बैठते ही बोले—''फ़रमाइये?''

मैंने पूछा—''आप अरसे से कहानियाँ लिख रहे हैं। क्या आपको नहीं लगता कि आज की हिन्दी कहानी फ्रस्ट्रेटेड दिमाग़ की उपज है क्योंकि उसमें भय, कुंठा, संत्रास, दिशाहीनता आदि के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता?''

अमृतराय बोले—''इसका तो बड़ा सीधा-सा जवाब है। निश्चय।''

''अनुवाद के क्षेत्र में भी आपने काफ़ी काम किया है और मेरा तो निश्चित मत है कि हिन्दी के कुछ श्रेष्ठतम अनुवादकों में से आप एक हैं। अनुवाद की समस्या इधर तेज़ी से उभरी है। यह बताएं कि सफल और श्रेष्ठ अनुवाद किस तरह संभव है?''

''हाँ, हमने अनुवाद किये हैं। श्रेष्ठ विदेशी साहित्य हिन्दी में अनूदित होकर आयेगा तो उससे हिन्दी को बहुत लाभ होगा। यह सही है कि अच्छा अनुवाद करना कठिन काम है। अच्छा अनुवाद तो दोनों भाषाओं के अच्छे ज्ञान से ही संभव हो सकता है।''

मैंने पूछा—''साहित्य में राजनीति का हस्तक्षेप उचित है या नहीं?''

''सबसे पहले तो यह समझना पड़ेगा कि आपका मतलब साहित्य की राजनीति से है या राजनीति की राजनीति से है।.....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

बनारस के 5 कलाकारों को यशभारती

उत्तर प्रदेश सरकार ने खेल, लेखन, संगीत और समाजसेवा से जुड़े 22 लोगों को यशभारती पुरस्कार देने की घोषणा की है।

मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने विगत दिनों राज्य की 22 विभूतियों को यशभारती देने की घोषणा की। उनके नाम इस प्रकार हैं—अभिषेक यादव, मोहनापुर गोरखपुर (मार्वल्स वर्ड रिकार्ड, न्यूजीलैण्ड), अनूप जलोटा, लखनऊ (भजन गायन), वंश गोपाल यादव, महोबा (आल्हा गायन), हीरालाल यादव, वाराणसी (भोजपुरी, बिरहा लोकगीत गायन), धर्मेन्द्र सिंह, गुन्नौर सम्भल (मुक्केबाजी), भगत सिंह हिंद केशरी, बागपत (कुश्ती), लाल बचन यादव, गोरखपुर (कुश्ती), देवी प्रसाद पाण्डेय, गोण्डा (लेखन), प्रो० माता प्रसाद त्रिपाठी, गोरखपुर (लेखन), विजयपाल यादव, गाजियाबाद (कुश्ती), पंडित विकास महाराज, वाराणसी (सरोद वादक), रमेश भइया, शाहजहांपुर (सामाजिक कार्यकर्ता), समीर पुत्र अंजान, वाराणसी (गीतकार), मनव्वर अंजान, लखनऊ (जूडो), रेखा भारद्वाज (गायन), पं० राजन-साजन मिश्र, वाराणसी (शास्त्रीय गायन), बेकल उत्साही, बलरामपुर (शायर), अशोक कुमार, मेरठ (हाकी), श्वेता प्रियदर्शी, मैनपुरी (शतरंज), राजेश यादव, संत कबीरनगर (रोइंग), जगदीश गाँधी, लखनऊ (शिक्षा), योगेन्द्र सिंह यादव, बुलंदशहर (परमवीर चक्र विजेता)।

राष्ट्रपति ने 57 भाषाविदों को किया सम्मानित

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अरबी और फारसी भाषा में योगदान के लिए कुल 57 विद्वानों को सम्मानित किया। यह सम्मान वर्ष 2012 और 2013 के लिए दिए गए।

2012 में संस्कृत भाषा के लिए सम्मानित किए गए विद्वानों में सदगुरु कृष्णयाजी, प्रोफेसर कृष्णानन्द झा, डॉ० मनीषा पाठक, डॉ० रविन्द्र कुमार नागर, अंबाराम मणिशंकर जोशी, डॉ० रामेश्वर दत्त शर्मा, प्रोफेसर हरिश्चन्द्र पांडुरंग रेणापुरकर, डॉ० के० चन्द्रशेखरन नायर, डॉ० पंकज त्रिंबक चांदे, पण्डित गोविंद चन्द्र मिश्र, स्वामी निगम बोध तीर्थ (राधाकृष्ण), डॉ० पुष्कर दत्त शर्मा, पक्षावेरी चक्रवर्ती सतकोपाचारियार, प्रोफेसर सुधांशु शेखर शास्त्री और डॉ० जयदेव वेदालंकार शामिल हैं।

पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी में भाषा विज्ञान के प्रोफेसर जॉर्ज कार्दोना को संस्कृत व्याकरण के क्षेत्र में और भाषा के अध्ययन के क्षेत्र में योगदान के लिए वर्ष 2012 का सम्मान दिया गया। अमेरिका और कनाडा के विद्वानों के एक बड़े अभियान के अन्तर्गत वाल्मीकि रामायण का अंग्रेजी अनुवाद करने के लिए 2013 का सम्मानपत्र डॉ० रॉबर्ट फिलिप गोल्डमैन को दिया गया।

वहीं 2012 में फारसी भाषा के क्षेत्र में योगदान के लिए प्रोफेसर हाफिज अब्दुल मन्नान, हाफिज शाह तकी अनवर, प्रफोसर खान मोहम्मद आतिफ अरबी, मौलाना मुफ्ती अहमद हसन खान, प्रोफेसर सैय्यद कफील अहमद कासमी और प्रोफेसर शम्स तबरेज खान को सम्मानित किया गया। वहीं 2012 में पालि-प्राकृत में योगदान के लिए प्रोफेसर सुदर्शन लाल जैन को सम्मानित किया गया। इसी समारोह में वर्ष 2012 का महर्षि बादरायण व्यास सम्मान भी दिया गया। संस्कृत के लिए यह पुरस्कार डॉ० परमानन्द झा, प्रोफेसर का०इ० मधुसूदनन, डॉ० विष्णुकान्त पाण्डेय, डॉ० शत्रुघ्न त्रिपठी को दिया गया। डॉ० मोहम्मद ऐहतेशामुद्दीन को फारसी के लिए और डॉ० रजनीश शुक्ल को पालि-प्राकृत भाषा में योगदान देने के लिए इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वहीं 2013 के लिए संस्कृत भाषा के क्षेत्र में योगदान के लिए प्रोफेसर सब्बरायन पेरी, प्रोफेसर कृष्ण लाल, प्रोफेसर हंसाबेन एन० हिंडोचा, प्रोफेसर चन्द्रकान्त शुक्ल, प्रो० मल्लिकार्जुन भीतरड्डेप्प परड्डी को सम्मानित किया गया।

काशी की डॉ० नाहिद को पद्मश्री

शिक्षण संस्थाओं में बच्चों के बीच नि:शुल्क संस्कृत रूपी ज्ञान गंगा को प्रवाहमान रखने वाली काशी की डॉ० नाहिद आबिदी को राष्ट्रपति ने पद्मश्री से सम्मानित किया है। यह पुरस्कार उन्हें साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया गया है।

गंगा-जमुनी तहजीब का जीता जागता रूप डॉ० आबिदी ने कहा कि ''यह आबिदी का नहीं, संस्कृत जगत व काशी का सम्मान है।'' भाषा किसी धर्म की नहीं, यह सभी की है। पद्मश्री डॉ० नाहिद आबिदी का इस्लामिक फाउंडेशन ऑफ इंडिया के सदस्यों ने विगत दिनों उनके वाराणसी आवास पर बुके, अंगवस्त्रम देकर सम्मान किया।

नरेन्द्र कोहली को राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

भोपाल में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार नरेन्द्र कोहली को मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनरेश यादव ने विभूषित किया। इस सम्मान के अन्तर्गत उन्हें दो लाख रुपए की राशि, सम्मान-पट्टिका, शॉल एवं श्रीफल प्रदान किए गए।

रमाकान्त स्मृति साहित्य पुरस्कार

पिछले दिनों दिल्ली में सोलहवें रमाकान्त स्मृति कहानी पुरस्कार समारोह में रमाकान्त के मित्र और वरिष्ठ रचनाकार विष्णुचन्द्र शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में लखनऊ से आईं कथाकार किरण सिंह को सम्मानित करते हुए वरिष्ठ आलोचक और इस बार के निर्णायक विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि साहित्य पर आज कॉर्पोरेट जगत् की नजर लग चुकी है। इससे बचना होगा।

रूपसिंह चंदेल को सम्मान

राजस्थान के साहित्यकार आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में दिया जाने वाला 15वाँ 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान' वरिष्ठ लेखक डॉ० रूपसिंह चंदेल को उनके उपन्यास 'गुलाम बादशाह' के लिए और दूसरा 'विशिष्ट आचार्य निरंजननाथ सम्मान' सम्पूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए वरिष्ठ कथाकार माधव नागदा को हिन्दी पत्रिका 'संबोधन' और 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान समिति' के संयुक्त तत्त्वावधान में कांकरोली (राजस्थान) में एक समारोह में पिछले दिनों प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कर्नल देशबंधु आचार्य और मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार-पत्रकार विष्णु नागर थे।

सुरेश कुमार को 'साहित्यश्री'

पिछले दिनों अलीगढ़ में स्वर्गीय डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी अर्द्धांगिनी तारावली गुप्त की स्मृति में प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'साहित्यश्री' सम्मान प्रसिद्ध साहित्यकार सुरेश कुमार को दिया गया। 'पेड़ जब बोलने पे आते हैं', 'उदासियों से घिरा चाँद' सरीखी कृतियों के रचयिता सुरेश कुमार को अभयकुमार गुप्त ने दस हजार रुपये की सम्मान राशि एवं स्मृतिचिह्न भेंट किया।

अखिल भारतीय काव्य पुरस्कार-2013

हिन्दी साहित्य परिषद्, अहमदाबाद का 'डॉ० रामेश्वरलाल खंडेलवाल 'तरुण' अखिल भारतीय काव्य पुरस्कार-2013' इस बार कवयित्री एवं गीतकार रजनी मोरवाल को उनके गीत-संग्रह 'धूप उतर आई' के लिए दिया गया। पुरस्कारस्वरूप रजनी मोरवाल को एक शाल, ताम्र-पत्र एवं रु० 11000.00 की राशि प्रदान की गई।

गाला साहित्य-कला पुरस्कार

विगत दिनों मुंबई में हिन्दी के बहुश्रुत लेखक, पत्रकार मनहर चौहान को जीवन-गौरव पुरस्कार (लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड) देकर सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें पत्रकारिता एवं कथा-साहित्य में आजीवन अप्रतिम कार्य के लिए अर्पित किया गया। इस हेतु समारोह का आयोजन किया था ठाणे (महाराष्ट्र) की सांस्कृतिक संस्था 'श्रीमती तारामती विशनजी गाला साहित्य-कला पुरस्कार समिति' ने, जो गत

10 वर्षों से प्रति वर्ष अलग-अलग क्षेत्रों के 5 कलाधर्मियों को पुस्कृत करती चली आ रही है।

इस वर्ष लेखन के लिए मनहर चौहान, लोकनृत्य एवं संगीत के लिए फाल्गुनी शाह, संगीत-वादन एवं गायन के लिए केशवजी सतरा, कच्छी लोक-साहित्य के लिए राजेश गढ़वी तथा कच्छी साहित्य के लिए आसमल धूलिया को पुरस्कार दिए गए।

संदीप राशिनकर सम्मानित

इंदौर के चित्रकार, कवि व लेखक संदीप राशिनकर को नरसिंहपुर में टी०आर० नेमा फाउण्डेशन द्वारा उनके कला अवदान के लिए अखिल भारतीय स्तर के कला-संस्कृति सम्मान से अलंकृत किया गया।

चेन्नई में डॉ० बीना बुदकी का सम्मान

हिन्दी कश्मीरी संगम के सचिव व प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ० बीना बुदकी ने भाषा संगम, तमिलनाडु व रामन हिन्दी विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में चेन्नई के रामकृष्ण मिशन स्कूल में 'कश्मीरी पण्डितों के विस्थापन' पर एक भावभीना भाषण दिया। उन्हें इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

इस सारस्वत आयोजन के पहले सत्र का संचालन डॉ० गोविन्दराजन ने तथा दूसरे सत्र का संचालन सुदूर दक्षिण के सुन्दरनार विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रो० डॉ० भवानी ने किया। इस अवसर पर लघुकथा लेखिका श्रीमती सुलोचना ने तमिल में अनूदित 'माँ कह एक कहानी' पुस्तिका का लोकार्पण किया। इसी अवसर पर डॉ० विद्या बालसुब्रह्मण्यन की पुस्तिका 'विभिन्न रामायण-विभिन्न सन्दर्भ' का लोकार्पण हुआ।

डॉ० सुनील कुमार परीट सम्मानित

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली ने कर्नाटक के डॉ० सुनील कुमार परीट को उनकी समग्र साहित्य सेवा के लिए 'डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप नेशनल अवार्ड-2013' प्रदान कर सम्मानित किया। अकादमी के अध्यक्ष डॉ० सोहनलाल सुमनाक्षर ने उन्हें उपाधि प्रदान की। इसी क्रम में बिहार के विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ के तत्वावधान में डॉ० सुनील कुमार परीट को राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उज्जैन के श्री राम नाम सेवा आश्रम में विद्यापीठ के कुलाधिपति डॉ० सुमनभाई 'मानस भूषण' ने 'विद्यासागर' उपाधि प्रदान की। इसमें प्रमाण-पत्र, प्रतीक चिह्न, मेडल और किताबें देकर सम्मानित किया गया।

विश्वनाथ त्रिपाठी को व्यास सम्मान

के०के० बिरला फाउण्डेशन का प्रतिष्ठित व्यास सम्मान वर्ष 2013 के लिए प्रसिद्ध लेखक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी की पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश' को दिया जायेगा।

फाउण्डेशन की विज्ञप्ति के अनुसार, त्रिपाठी की संस्मरणात्मक पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश' को 23वें व्यास सम्मान के लिए चुना गया, जो वर्ष 2011 में प्रकाशित हुई थी। व्यास सम्मान 10 वर्ष की अवधि में प्रकाशित किसी भारतीय लेखक की हिन्दी की उत्कृष्ट कृति को प्रदान किया जाता है। इसकी राशि ढाई लाख रुपये है।

काका हाथरसी सम्मान

विश्व पुस्तक मेले में विगत दिनों प्रसिद्ध व्यंग्यकार आलोक पुराणिक और हास्य-व्यंग्य के कवि व दैनिक जागरण के पत्रकार डॉ० सुरेश अवस्थी को काका हाथरसी सम्मान दिया गया। काका हाथरसी ट्रस्ट की ओर से उन्हें श्रीफल, शॉल और सम्मान राशि प्रदान की गयी। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार नरेन्द्र कोहली ने की। डॉ० सुरेश अवस्थी को वर्ष 2011 और आलोक पुराणिक को वर्ष 2012 का काका हाथरसी सम्मान दिया गया है। इस क्रम में स्वर्ण ज्योति की पुस्तक 'एक कुल्हड़ चाय' और मीना अग्रवाल / गिरिराज शरण अग्रवाल द्वारा सम्पादित पुस्तक 'वृहद हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश' का लोकार्पण भी किया गया।

पुरस्कार समारोह सम्पन्न

विगत दिनों हैदराबाद के रवीन्द्र भारती सभागार में वेमूरि आंजनेय शर्मा स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुरस्कार ग्रहण कार्यक्रम में सर्वश्री अहिल्या मिश्र (हिन्दी), के० शिवा रेड्डी (तेलुगु) तथा एन० शारदा (रंगमंच) को 'वेमूरि आंजनेय शर्मा स्मारक पुरस्कार' मुख्य अतिथि श्री के०वी० रमणाचारी ने प्रदान किए। पुरस्कारस्वरूप उन्हें दस हजार रुपए नकद तथा स्मृति-चिह्न भेंट किए गए। विशिष्ट अतिथि श्री मंगलागिरी प्रसाद थे व अध्यक्षता ए०एन० जगन्नाथ शर्मा ने की।

उर्दू एकादमी के अध्यक्ष मुनव्वर राना

शायरी में अलग पहचान बनाने वाले मशहूर शायर मुनव्वर राना को उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी का अध्यक्ष व नवाज देवबन्दी को अकादमी का चेरयमैन बनाया गया है।

'व्यंग्यश्री सम्मान'

दिल्ली के हिन्दी भवन सभागार में हिन्दी भवन के अध्यक्ष तथा 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी के सान्निध्य में आयोजित समारोह में पण्डित गोपालदास व्यास के जन्मदिवस पर दिया जानेवाला 'व्यंग्यश्री सम्मान' प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री जवाहर चौधरी को दिया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपए की धनराशि, वाग्देवी की प्रतिमा, प्रशस्ति-पत्र, रजत श्रीफल तथा शॉल आदि भेंट किए गए। अध्यक्षता प्रो० नामवर सिंह ने की। मुख्य अतिथि डॉ० ज्ञान चतुर्वेदी एवं विशिष्ट अतिथि श्री यज्ञ शर्मा थे।

स्पंदन-सम्मान

ललित कलाओं के लिए समर्पित स्पंदन संस्था भोपाल की ओर से स्थापित स्पंदन सम्मान समारोह का आयोजन विगत दिनों भारत भवन में प्रख्यात साहित्यकार डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय के मुख्य आतिथ्य में किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्यकार मंजूर एहतेशाम, सन्तोष चौबे तथा रमेश दवे उपस्थित थे।

समारोह में श्री ओमा शर्मा को स्पंदन कृति सम्मान (कथा संग्रह कारोबार के लिए), सुश्री नीलेश रघुवंशी को स्पंदन कृति सम्मान (कविता संग्रह 'अन्तिम पंक्ति में' के लिए), सुश्री बिन्दु जुनेजा को ललित कला सम्मान (ओडिसी नृत्य के लिए), सुश्री संज्ञा उपाध्याय को साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान (कथन पत्रिका के लिए) तथा वैभव सिंह को स्पंदन आलोचना सम्मान (आलोचना कर्म के लिए) से सम्मानित किया गया।

निराला स्मृति सम्मान

निराला साहित्य संस्थान द्वारा इस बार निराला स्मृति सम्मान भोपाल के राजेश जोशी को दिया गया। वसंत पंचमी पर इलाहाबाद में आयोजित समारोह में राजेश जोशी को सम्मानित किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत 21 हजार रुपये प्रदान किए गये। स्मृति सम्मान के लिए चुने गए राजेश जोशी के पाँच कविता संग्रह, दो कहानी संग्रह, आलोचनात्मक टिप्पणी की दो पुस्तकें, बच्चों के लिए कविताओं का संकलन तथा नाटक प्रकाशित है।

शमशेर सम्मान

नई दिल्ली। वर्ष 2012-13 का शमशेर सम्मान, कविता के लिए हिन्दी के वरिष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण कवि ऋतुराज एवं सृजनात्मक गद्य के लिए गद्यकार, लेखक, संस्कृतिकर्मी सुधीर विद्यार्थी को समर्पित किया गया है।

साहित्य अकादमी भाषा सम्मान

साहित्य अकादमी ने साहित्योत्सव 2014 के दौरान विगत दिनों भाषा पुरस्कारों की घोषणा कर दी। वर्ष 2011 के लिए उत्तरी क्षेत्र का भाषा सम्मान प्रसिद्ध लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी को और दक्षिण क्षेत्र के लिए डॉ० पुतुस्सेरी रामचंद्रन को दिया जाएगा। वर्ष 2012 के लिए पश्चिमी क्षेत्र में यह सम्मान प्रो० सुमेरचंद्र केसरीचंद जैन को मिलेगा। सम्मान के रूप में इन्हें एक लाख रुपये और प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे।

भारतीय लेखक पंकज मिश्रा को येल साहित्य पुरस्कार

भारतीय युवा लेखक पंकज मिंश्रा को येल यूनिवर्सिटी साहित्य पुरस्कार के लिए चुना गया है। उन्हें डेढ़ लाख डॉलर (करीब 92 लाख रुपये) की राशि पुरस्कार के तौर पर दी जाएगी। मिश्रा दुनिया के सात देशों के उन आठ लेखकों में शामिल हैं

जिन्हें उनके काम और योगदान के लिए आगामी सितम्बर माह में पुरस्कृत किया जाएगा।

श्रीलाल शुक्ल स्मृति सम्मान श्री संजीव को

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ्को साहित्य सम्मान की तीसरी कड़ी में वर्ष 2013 के लिए यह सम्मान हिन्दी के प्रमुख कथाकार संजीव को दिया गया।

श्रीराम सेंटर सभागार में आयोजित समारोह में सेनेगर गणराज्य के संस्कृति मन्त्री अब्दुल अजीज म्बाये ने उन्हें सम्मान के साथ 11 लाख रुपये शॉल, स्मृति चिह्न तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया।

सत्पथी को साहित्य भारती सम्मान

ओडिशा के साहित्य में अमूल्य योगदान देने वाली कवियित्री प्रतिभा सत्पथी को वर्ष 2013 के साहित्य भारती सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। विगत दिनों गंगाधर रथ फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से घोषणा की गई कि केन्द्र साहित्य अकादमी विजेता कवियित्री को यह सम्मान दिया जाएगा।

मध्यप्रदेश लेखक संघ का सम्मान अलंकरण

मध्यप्रदेश लेखक संघ का 20वाँ साहित्यकार सम्मान समारोह हिन्दी भवन भोपाल में विजयदत्त श्रीदव, संस्थापक माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। सारस्वत अतिथि सुखदेव प्रसाद दुबे, अध्यक्ष मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति थे। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार बटुक चतुर्वेदी ने की। लेखक संघ के इस सालाना आयोजन में प्रदेश की तीन पीढ़ियों के चौदह साहित्यकारों को विभिन्न साहित्यिक सम्मानों से अलंकृत किया गया।

अक्षर आदित्य सम्मान इन्दौर के प्रख्यात कथाकार व व्यंग्यकार सूर्यकान्त नागर, सारस्वत सम्मान भोपाल के वरिष्ठ रचनाकार व छायाकार नवल जायसवाल, पुष्कर जोशी स्मृति साहित्कार सम्मान भोपाल की प्रसिद्ध कथाकार उर्मिला शिरीष, देवकीनन्द माहेश्वरी स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान टीकमगढ़ के युवा रचनाकार भारत विजय बगेरिया, काशीबाई मेहता स्मृति लेखिका सम्मान ग्वालियर की सुपरिचित कथाकार सुनीता पाठक, कस्तूरी देवी चतुर्वेदी स्मृति लोकभाषा सम्मान सागर के वरिष्ठ बुन्देली रचनाकार ओमप्रकाश चौबे, डॉ० संतोष तिवारी समीक्षा सम्मान उज्जैन के वरिष्ठ समीक्षक बी०एल० आच्छा, हरिओम शरण चौबे स्मृति गीतकार सम्मान मुरैना के सुपरिचित गीतकार सूर्य सक्सेना, हरीश निगम स्मृति मालवी भाषा सम्मान इन्दौर की वरिष्ठ मालवी कवयित्री पुखराज पाण्डे, अमित रमेश शर्मा स्मृति हास्य-व्यंग्य मंच कवि सम्मान नागदा के प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य मंचीय कवि जगन्नाथ विश्व, डॉ० कमला चौबे स्मृति लेखिका सम्मान भोपाल की सुपरिचित लेखिका ऊषा सक्सेना, मालती बसंत नव लेखिका सम्मान ग्वालियर की नवोदित कवयित्री आद्या दीक्षित, पं० ब्रजवल्लभ आचार्य स्मृति संस्कृतज्ञ सम्मान भोपाल के सुपरिचित संस्कृतज्ञ निलिम्प त्रिपाठी, डॉ० बल्लभदास शाह अनुवाद सम्मान इन्दौर के वरिष्ठ अनुवादक (समग्र कालिदास का हिन्दी दोहावली में अनुवाद करने वाले) ओम जोशी को दिया गया। आभार प्रदर्शन प्रभुदयाल मिश्र ने किया।

शब्द प्रवाह साहित्य सम्मान 2014 के पुरस्कारों की घोषणा

उज्जैन। साहित्यिक संस्था शब्द प्रवाह साहित्य मंच उज्जैन द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 2014 के साहित्यिक पुरस्कारों की घोषणा की गई। ये पुरस्कार विगत 30 मार्च को उज्जैन में आयोजित समारोह में प्रदान किये गये।

पर्यावरण अवार्ड

भारतीय पर्यावरण विशेषज्ञ अशोक खोसला को संयुक्त अरब अमीरात के प्रतिष्ठित जायद अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पर्यावरण के क्षेत्र में उनकी वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के लिए उन्हें इस अवार्ड के साथ तीन लाख डॉलर (करीब 1.89 करोड़) की पुरस्कार राशि दी गई। डेवलपमेंट अल्टरनेटिव ग्रुप के संस्थापक खोसला को छठे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण अवार्ड के लिए चुना गया था। उन्हें यह अवार्ड मलेशिया के डॉ० जाकरी अब्दुल हमीद के साथ संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

प्रोफेसर गोपाकुमार को बिरला पुरस्कार

वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए वर्ष 2013 का घनश्यामदास बिरला पुरस्कार प्रोफेसर राजेश गोपाकुमार को दिया जाएगा।

हरीशचंद्र शोध संस्थान इलाहाबाद में कार्यरत गोपाकुमार को स्ट्रिंग थ्योरी, क्वांटम फील्ड थ्योरी और गणित के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करने पर इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। के०के० बिरला फाउंडेशन की ओर से भारत में कार्यरत 50 वर्ष से कम उम्र के वैज्ञानिक को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। पुरस्कार के साथ डेढ़ लाख रुपये की सम्मान राशि दी जाती है।

दुबे को सुब्रह्मण्य भारती

लब्धप्रतिष्ठित ललित निबन्धकार डॉ० श्यामसुन्दर दुबे को हिन्दी साहित्य का महत्त्वपूर्ण 'सुब्रह्मण्य भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार अखिल भारतीय स्तर पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली' द्वारा प्रवर्तित है। इस पुरस्कार में 1,00,000 (एक लाख रुपये) की राशि प्रदान की जाती है। अब तक डॉ० दुबे को उनके रचनात्मक अवदान पर अनेक राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। डॉ० दुबे नवगीतकार, लोकविद् कथाकार एवं समीक्षक के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना स्थान निर्मित कर चुके हैं। अब तक उनकी तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रो० बी०वै० ललिताम्बा को 'जीवनोपलब्धि सम्मान'

चेन्नै में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्यिक सम्मेलन में तमिलनाडु साहित्य अकादमी के तत्वावधान में सर्वश्रेष्ठ 'जीवनोपलब्धि सम्मान' पुदुचेरी के राज्यपाल श्री वीरेन्द्र कटारिया ने प्रो० बी०वै० ललिताम्बा को प्रदान किया।

डॉ० भवानीलाल भारतीय को स्वामी श्रद्धानन्द सम्मान

विगत दिनों लाला दीवानचंद ट्रस्ट नई दिल्ली में वैदिक विद्वान डॉ० भवानीलाल भारतीय को स्वामी श्रद्धानन्द सम्मान प्रदान किया गया। उन्हें जीवनपर्यन्त श्रेष्ठकर कार्यों के लिए सम्मान पत्र शॉल तथा एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया गया। डॉ० भवानीलाल भारतीय वर्तमान में श्रीगंगानगर में कई वर्षों से अपनी लेखनी व प्रवचनों से वैदिक विचारधारा तथा हिन्दी साहित्य में अपने लेखों के माध्यम से देशवासियों को लाभान्वित कर रहे हैं।

वर्ष 2014 का डॉ० चन्द्र नाट्य पुरस्कार

भोपाल। रंगमंच से जुड़ी विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ अवदान के लिए नाटककार, नाट्य समीक्षक, निर्देशक, कलाकार आदि को पुरस्कृत करने हेतु ख्यातिनाम नाटककार डॉ० सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के सहयोग से मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा पिछले वर्ष स्थापित 11,000 रुपये का 'डॉ० सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' नाट्य पुरस्कार' इस वर्ष भोपाल के वरिष्ठ नाट्य निर्देशक फर्रूख शेर खान को प्रदान किया गया।

पं० जसराज को शिखर प्रतिभा सम्मान

कोलकाता। महानगर के प्रमुख सांस्कृतिक-साहित्यिक केन्द्र श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से प्रख्यात शास्त्रीय गायक पण्डित जसराज को राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया है। उत्तर कोलकाता के ओसवाल भवन में विगत दिनों आयोजित भव्य समारोह में पण्डितजी को सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र, श्रीफल व एक लाख की राशि का चेक प्रदान किया गया। उन्हें यह सम्मान स्वर साम्राज्ञी गिरिजा देवी ने प्रदान किया।

विनोद तिवारी को 18वाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान

हिन्दी आलोचना के लिए वर्ष 2013 का 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान' युवा आलोचक विनोद तिवारी को दिया जाएगा। यह सम्मान उनकी पुस्तक 'नई सदी की दहलीज पर' के लिए दिया जाएगा।

साल 2013 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

नवलेखन पुरस्कार

विगत दिनों दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले में भारतीय ज्ञानपीठ के आठवें नवलेखन पुरस्कार समारोह में सर्वश्री योगिता यादव को उनके कहानी-संग्रह 'क्लीन चिट' और अरुणाभ सौरभ को उनके कविता-संग्रह 'दिन बनने के क्रम में' के लिए 'नवलेखन पुरस्कार' प्रदान किया गया।

'नीरज पुरस्कार' व 'शहरयार पुरस्कार'

विगत दिनों अलीगढ़ की कृष्णांजलि नाट्यशाला में उ०प्र० शासन द्वारा अलीगढ़ प्रदर्शनी में प्रतिवर्ष दिया जाने वाला एक लाख रुपये का 'नीरज पुरस्कार' कवि श्री अशोक 'अंजुम' एवं एक लाख एक हजार रुपये का 'शहरयार पुरस्कार' श्री मुजीब शहजर को प्रदान किया गया। पुरस्कार-स्वरूप दोनों रचनाकारों को चेक, स्मृति-चिह्न, शॉल तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

'सृजन मनीषी सम्मान'

विगत दिनों मुजफ्फरनगर के वेदपाठी भवन में आचार्य सीताराम चतुर्वेदीजी के 108वें जन्मदिवस पर अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी की ओर से वरिष्ठ गीतकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को सातवाँ 'सृजन मनीषी सम्मान' प्रदान किया गया। सम्मान-स्वरूप उन्हें मानपत्र, शॉल, सरस्वती की प्रतिमा के अतिरिक्त थैली भेंट की गई।

श्री योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' सम्मानित

विगत दिनों मन्यौरा में राष्ट्रकवि पं० बंशीधर शुक्ल स्मारक समिति, लखीमपुर-खीरी के तत्वावधान में बसन्त पंचमी पर आयोजित सम्मान समारोह में श्री योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' को 'राजकवि पं० भरोसे लाल 'पंकज' स्मृति साहित्य सृजक सम्मान' से सम्मानित किया गया। सर्वश्री सरोजप्रकाश दीक्षित एवं रविप्रकाश सिंह ने उन्हें अंगवस्त्र, सम्मान-पत्र, प्रतीक चिह्न तथा सम्मान राशि भेंट की। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सत्यधर शुक्ल ने अपने विचार व्यक्त किए।

'कसप मनोहर श्याम जोशी पुरस्कार' व 'गद्य सम्मान'

विगत दिनों दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेण्टर में राजकमल प्रकाशन के 65वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में श्री अखिलेश को उनके उपन्यास 'निर्वासन' की पाण्डुलिपि के लिए 'कसप मनोहर श्याम जोशी पुरस्कार' एवं श्री कृष्ण कुमार को 'चूड़ी बाजार में लड़की' कृति के लिए 'गद्य सम्मान' प्रदान किया गया। सर्वश्री नामवर सिंह, कृष्णा सोबती तथा अशोक माहेश्वरी ने उन्हें एक-एक लाख रुपये की धनराशि और प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

गोविन्द मिश्र को 'सरस्वती सम्मान'

नई दिल्ली। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक गोविंद मिश्र को वर्ष 2013 के लिए के०के० बिरला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान उनकी पुस्तक 'धूल पौधों पर' के लिए दिया गया है। वर्ष 2008 में प्रकाशित इस कृति को देश की 22 भाषाओं में दस वर्ष के अंतराल 2003-2012 में प्रकाशित कृतियों के बीच से चुना गया है। इस औपन्यासिक कृति में गोविन्द मिश्र का शिल्प और शैली पूरे निखार पर है। मिश्र हिन्दी के दूसरे ऐसे कवि हैं जिन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। मिश्र से पहले 1991 में हरिवंश राय बच्चन को यह पुरस्कार मिल चुका है।

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
	(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
	(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
	पता	चौक, वाराणसी
4.	प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
	(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
5.	सम्पादक का नाम	पराग कुमार मोदी
	(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(दिनांक 1 मार्च, 2014)

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(अनुरागकुमार मोदी)

पाठकों के पत्र

भारतीय वाङ्मय अंक 6-12, 1-2 (जून-दिसम्बर 2013, जनवरी-फरवरी 2014) सादर मिला, आभार! यही कृपा, नियमित बनाए रखेंगे!

सम्पूर्ण दो-पृष्ठ विस्तार में, आपका सम्पादकीय लेख अत्यन्त सटीक एवं साहित्यिक भाषा-शैली में है सो बधाई!

—अम्बु शर्मा, नैणसी

'भारतीय वाङ्मय' के मिलते रहने से आपकी गतिविधियों व कुशलता का समाचार मिलता रहता है।

अभी कुछ दिनों पूर्व आप द्वारा प्रेषित 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' प्राप्त हुआ। इसे प्रकाशित करने हेतु आपका शत-शत अभिनन्दन। यह पुस्तक भोजपुरी की समग्र संस्कृति के चित्रण, चिंतन-मनन, आकलन आदि के लिए आधारभूत ग्रन्थ सिद्ध होगी। इस कार्य की वर्षों से प्रतीक्षा थी। भोजपुरी में लिखित, अलिखित विपुल साहित्य उपलब्ध है, पर उसके क्रमवार ऐतिहासिक अभिव्यक्ति की कृति नहीं होने से एक मानकता व प्रमाणिकता का अभाव खटकता था, जो पूज्य गुरुवर प्रो० अर्जुन तिवारीजी के हाथों सम्पन्न हुआ हम सब उनका अभिनन्दन, वंदन करते हैं। एक ग्रन्थ का रूप लिए हुए, भोजपुरी की हर विधा व क्षेत्र के वैश्विक स्वरूप का प्रतिवेदन इसमें प्रस्तुत है।

विद्वानों ने इसकी पुष्टि व संस्तुति भी की है—यह इसकी मान्यता में सजीवता व सप्राणता भर रही है। **—शुभदा पाण्डेय,** सिलचर

9 माह के लम्बे अन्तराल के बाद 'भारतीय वाङ्मय' का सयुक्तांक पाकर आश्वस्त हुआ कि मैं अभी पत्रिका परिवार की स्मृति में हूँ। देर से ही सही मगर साहित्य जगत की इतनी ढेर सारी सामग्री का संचयन इस लघुकाय पत्रिका में गागर में सागर समोने जैसा है। सम्पादकीय से लेकर पुस्तक प्राप्ति तक सारी पत्रिका पाते ही एक बैठक में पढ़ गया। देशभर की तमाम साहित्यिक गतिविधियों के साथ प्रकाशित श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों की जानकारी सहजता से सुलभ हो जाती है जो अन्यत्र दुर्लभ है। **—शिवभूषण सिंह गौतम**
छतरपुर, मध्यप्रदेश

जनवरी-फरवरी 14 का 'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त हुआ। धन्यवाद! 'फूल लाया हूँ कमल के' के अन्तर्गत आधुनिक पूँजीवाद, शिक्षित बेरोजगार नौजवानों की स्थिति का दिग्दर्शन कराकर विचार करने को कहा गया है।

पुस्तक परिचय उन्हें ध्यान से देखने की ललक जागृत करता है। अन्य सामग्री भी पठनीय है। बधाई स्वीकार कीजिए **—मदनमोहन वर्मा**
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

प्राचीन भारतीय शिक्षण-पद्धति

प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर

आकार डिमाई

पृष्ठ 240

सजिल्द : 978-81-89498-68-9 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-89498-69-6 • रु० 175.00

आजकल प्राचीन भारतीय संस्कृति के विषय में भारत में तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई है। उसके अनेक पहलुओं को जानने के लिए सामान्य जनता भी उत्सुक है। उनको प्राचीन शिक्षण-पद्धति का साधारण व सम्पूर्ण ज्ञान देने के लिए यह पुस्तक लिखी गयी है। सामान्य पाठक, ऐतिहासिक संशोधक व शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी इन तीन प्रकार के वाचकों की दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गयी है। पुस्तक का विषय इस तरह से प्रतिपादित किया गया है कि सामान्य पाठक भी उसे सुगमता से समझ सकें। कठिन विषय व विवादभूत मत प्राय: पाद-टिप्पणियों में या परिशिष्टों में रखे गये हैं ताकि पुस्तक का मुख्य विषय सर्व पाठक सुलभतया समझें।

(पुस्तक की एक अध्याय का अंश)

अध्यापक और छात्र

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में शिक्षक के आदर्श क्या थे, उनसे किस प्रकार की योग्यता अपेक्षित थी, समाज में उनका क्या स्थान था, छात्र और अध्यापक के परस्पर सम्बन्ध कैसे थे तथा छात्र-जीवन की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं? ये विषय बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि किसी भी शिक्षण-पद्धति की सारी सफलता और असफलता इन पर निर्भर है।

अध्यापक का महत्त्व

आधुनिक युग में शिक्षण-संस्थाओं और विश्वविद्यालयों को जो महत्त्व प्राप्त है, प्राचीन भारत में वही महत्त्व अध्यापक का था। वह स्वाभाविक भी था क्योंकि यूरोप की भाँति भारत में भी शिक्षण-संस्थाओं का जन्म कुछ देर से हुआ। अपरिपक्व बुद्धि के बालकों का भार अपने ऊपर लेकर अध्यापक उन्हें योग्य और उपयोगी नागरिक बनाता है। अत: समाज में उसका आदर होना स्वाभाविक ही था। शिक्षक छात्र को अज्ञान के अन्धकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में ले जाता है। एक मनीषी का कथन है कि ज्ञानरूपी दीपक एक प्रकार के आवरण से आच्छन्न रहता है। गुरु इस आवरण को हटा देता है और तब प्रकाश की किरणें फूट निकलती हैं। अत: गुरु के प्रति कृतज्ञ होना और उसका अधिक से अधिक सम्मान करना शिष्य का कर्त्तव्य है। गुरु माता-पिता से अधिक आदर का पात्र है; क्योंकि माता-पिता से हमें केवल पार्थिव शरीर ही मिलता है, गुरु से बौद्धिक उन्नति व विकास। वैदिक काल से ही आचार्य को शिष्य का मानस-पिता माना गया है। उसकी सहायता और मार्गदर्शन के बिना शिक्षा सम्भव नहीं है। ज्ञान के लिए गुरु अपरिहार्य है। एकलव्य की कथा द्वारा यही बात बड़े सुन्दर ढंग से समझायी गयी है। द्रोणाचार्य ने एकलव्य को अपनी पाठशाला में भर्ती करने से इनकार कर दिया, उसने अभिलषित गुरु की प्रतिमा बनायी। उस निर्जीव प्रतिमा से प्रेरणा लेकर उसने धनुर्विद्या का अभ्यास किया और उसमें सिद्धि प्राप्त की। बौद्ध और जैन सम्प्रदाय में भी गुरु का समान आदर है। गुरु के इस सम्मान से हमें आश्चर्य न करना चाहिये क्योंकि सभी मानते हैं कि स्कूल की इमारत और सजावट का छात्रों पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना एक योग्य और सदाचारी अध्यापक का जो कि उनको उपदेश और प्रेरणा देते हैं।

अध्यापक का सम्मान क्यों ?

प्राचीन भारत में अध्यापक का समाज में इतना महत्त्व और आदर क्यों था, इसे समझने के लिए अधिक माथापच्ची करने की आवश्यकता नहीं। भारत में प्राचीनकाल से ही वेदों की पढ़ायी मौखिक ही रही है। लेखन-कला के आविष्कार और साधारण जनता में उसके प्रचार के अनन्तर भी इस प्रथा में कोई अन्तर नहीं आया। महाभारत का कथन है कि जो व्यक्ति वेदों को लिपिबद्ध करता है उसे नारकीय यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। वैदिक मन्त्रों के शुद्ध स्वरोच्चारण पर जोर दिया जाता था। उच्चारण की शुद्धता सुयोग्य आचार्य के मुख से ही सीखी जा सकती थी। समाज में वेदों का अनुपम स्थान था और इस अमूल्य निधि की रक्षा बिना योग्य अध्यापकों के सम्भव न थी। अत: तत्कालीन समाज में अध्यापकों का कितना आदर रहा होगा, इसकी कल्पना भली प्रकार की जा सकती है। उपनिषद्-काल में देश में रहस्यवादी दर्शन का जन्म हुआ। उपनिषदों का विश्वास है कि मुक्ति का मार्ग तो गुरु ही दिखला सकता है। अत: इस काल में गुरु की महिमा और बढ़ गयी। दर्शन के क्षेत्र में गुरु की महिमा बढ़ने के साथ-साथ समाज में साधारण अध्यापकों का सम्मान भी बढ़ने लगा क्योंकि ये बिना किसी शुल्क के, बन्धन या लोभ के समाज की सेवा करते थे। एक बात और ध्यान देने की है। उस युग में पुस्तकें महँगी और दुर्लभ थीं। अत: उस काल के विद्यार्थी आज की अपेक्षा अपने गुरुओं पर अधिक निर्भर थे। व्यावसायिक शिक्षा, उच्चकोटि का कौशल्य केवल अनेक वर्षों के अनुभवी शिक्षकों से ही प्राप्त हो सकता है—पुस्तकों के पढ़ने से नहीं—यह सबको सुविदित है। अत: किसी भी व्यवसाय का मर्म जानने के लिए नौसिखुए शिल्पी का अपने गुरु की पूजा करना स्वाभाविक ही है ताकि उस पर प्रीति रखकर वह बिना कुछ छिपाये अपने सारे अनुभव का सार उसे बतला दे। विद्यार्थियों के मन पर गुरु के गुण-कीर्तन का बड़ा प्रभाव बाल्यावस्था में सुचारु रूप से हमेशा पड़ता है।

अध्यापकों का प्रशिक्षण

यद्यपि प्राचीन भारत में अध्यापकों का बड़ा सम्मान था पर ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल में आज के 'टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज' (अध्यापक महाविद्यालय) जैसी संस्थाएँ न थीं। समावर्तन के समय आचार्य शिष्य को आशीर्वाद देता था कि चारों दिशाओं में तुम्हें शिष्य प्राप्त हों। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्राचीन भारत के स्नातकों को अध्यापक के योग्य बनने के लिए किसी प्रकार की शिक्षा आवश्यक न समझी जाती थी। इसका कारण भी स्पष्ट है। छठें अध्याय में हम यह दिखायेंगे कि प्राचीन भारत के अध्यापक अपने विद्यार्थियों को पढ़ाते समय हर एक को पृथक्- पृथक् शिक्षा देते थे। वेदों के विद्यार्थी अपने अध्ययन-काल में ही आचार्य के मुख से सुनकर वैदिक मन्त्रों का शुद्ध-पाठ और तत्सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। व्याकरण, न्याय, छन्द, दर्शन आदि विषयों का विशेषाध्ययन करने वाले स्नातकों को सूत्रों की व्याख्या आदि के लिए किसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता न थी। आज कॉलेजों में निश्चित अवधि तक अध्यापकों के व्याख्यानों का श्रवण कर परीक्षा में कतिपय प्रश्नों का उत्तर लिख देने से 'डिग्री' (उपाधि) मिल जाती है; किन्तु प्राचीन भारत में यह बात न थी। अपने अध्ययन-काल में ही विद्यार्थियों को शास्त्रार्थों की कठिन अग्नि-परीक्षा में सम्मिलित होना पड़ता था जहाँ उन्हें अपर पक्ष का विद्वत्तापूर्ण खण्डन तथा स्वपक्ष का मण्डन करना पड़ता था। अत: अध्ययन की समाप्ति तक उनकी तर्क और वाद-विवाद की शक्तियाँ विशेष रूप से पुष्ट हो जाती थीं।.....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

पुस्तक परिचय

सर्वेश्वर का साहित्य

डॉ० श्रद्धानन्द

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 188

सजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-93-5146-053-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

नयी कविता के दौर में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले कवियों में सर्वेश्वर प्रमुख हैं। उनकी कविता अपने समय-सन्दर्भों से अधिक जुड़ी है। जहाँ उनकी कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों, विषमताओं, जटिलताओं का तीक्ष्ण यथार्थबोध है, वहीं नितान्त आत्मपरक कविताएँ भी। वे अपनी कविताओं को 'तनाव' की उपज मानते हैं। यही तनाव ही उन्हें 'लीक' तोड़ने को विवश करता है। वे अपना कवि धर्म मर्म को सहलाने में नहीं बल्कि उसे कुरेदने में पूर्ण मानते हैं। उनकी कविता जीवन के यथार्थ को बोलचाल की भाषा में व्यंग्यात्मक धार के साथ निरन्तर सम्भावनाओं की तलाश करती हुई लोकमत के विश्वास को सँजोती है जो कवि की लोक सम्पृक्ति का प्रमाण है। यही कारण है कि इनकी कविताओं में हाथों की नरमी है तो कसती मुट्ठियाँ भी। उनकी कविता आम जन की कविता है, लोक हृदय की व्यंजना है। लोक-चेतना के कवि सर्वेश्वर की कविताओं में जहाँ एक ओर गीत की लय और थाप है, वहीं दूसरी ओर मूल्य-संरक्षा की प्रतिबद्धता का ओजस्वी नाद। उनकी कविताओं में सब कुछ साफ-साफ और असरदार है। उनकी कविताएँ चटक, गमक और धमकदार हैं।

'सप्तक' कवियों में कुछ कवियों ने न केवल कविता को सँजोया बल्कि गद्य की अन्यान्य विधाओं को भी कविता की तरह ही समृद्ध किया। ऐसे कवियों में सर्वेश्वर भी एक हैं और विशेष हैं। यद्यपि उनकी साहित्यिक यात्रा कथा साहित्य से शुरू हुई थी परन्तु उन्होंने केवल कथा साहित्य को ही नहीं बल्कि गद्य की अन्य सभी विधाओं को भी कविता की तरह ऊँचाई प्रदान की। उनके कथा साहित्य में प्रेम के उदात्त भावों के साथ-साथ आक्रोश की समशीतोष्णता भी है, रागात्मक सम्बन्धों की तलाश है। उनके नाटक जनमूल्यों को धारण करते हुए व्यंग्य की सृष्टि करते हैं, वह भी लोक नाट्य शैली की प्रभावमयता के साथ। उनका यात्रावृत्त, संस्मरण, आत्मलेख एवं निबन्ध आदि सभी विधाओं में ज्ञानात्मक संवेदना निजता के साथ घुल-मिल गयी है। आलोचना में कलावादी एवं जनवादी मूल्यों का निर्वाह हुआ है। लेकिन जनवादी पक्षधरता की प्राथमिकता के साथ। सर्वेश्वर अपनी कविता की भाँति गद्य साहित्य में भी किसी प्रकार का बन्धन नहीं स्वीकारते, बँधे हैं तो मुक्ति से।

उनका गद्य साहित्य कविता से अलग नहीं, सम्पूरक है। नाटक हो या उपन्यास-कहानी, यात्रावृत्त हो या संस्मरण, निबन्ध हो या आलोचना, सभी अलग-अलग परिधियाँ बनाती हैं परन्तु 'तनाव' से आवेष्टित तथा संवर्धित उनके कविमन की परिधियाँ सबको अपने में समेट लेती हैं। परिणामत: उनके गद्य की प्रभावमयता बढ़ी।

उनका गद्य साहित्य विपुल है। कवि के बाद कथाकार, नाटककार के रूप में उनकी ख्याति अधिक रही है। उन्हें समय-समय पर रेखांकित किया जाता रहा। उनके समग्र रचना-कर्म पर फुटकल रूप से समय-समय पर लिखे गये लेखों को माला-रूप में पिरोने का यह एक सार्थक प्रयास है।

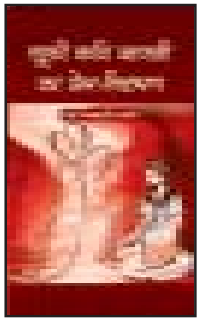

सूफ़ी कवि जायसी का प्रेम-निरूपण

डॉ० निज़ामुद्दीन अंसारी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 256

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-93-89498-72-6

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी भक्ति-साहित्य के चार प्रमुख स्तम्भों में एक हैं, जिन्होंने प्रेम की एक सांस्कृतिक पीठिका निर्मित करने में अन्यतम योगदान किया। सूफ़ी प्रेमाख्यानक काव्यों का मूलाधार प्रेम भी अनिर्वचनीय, अविभाज्य और अविरल प्रवाहमयी वह धारा है, जिससे दर्शन, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान और ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनेक स्रोत सम्बद्ध हैं और जिसकी अनेक उपधारायें अलग-अलग कालखण्डों में अलग-अलग रूपों में बहती दिखायी देती हैं। इन प्रेमाख्यानों में 'पद्मावत' अन्यतम है, जिसमें सूफ़ी सिद्धान्तों का काव्यात्मक निरूपण तो है ही, प्रेम के विभिन्न स्वरूपों, मज़िलों और उसकी प्रभावान्विति का कलात्मक चित्रण है। प्रेम सृष्टि का कारक है, प्रेमहीन दुनिया राख है या अस्तित्वहीन है। सामन्तवाद के क्रूर और हिंसक वातावरण को सूफ़ी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों के माध्यम से चीरते हुए मानवतावादी संस्कृति की स्थापना की, ब्रह्म, जीव, जगत् के सम्बन्धों की व्याख्या की। जायसी के प्रेम-निरूपण में सूफ़ी सिद्धान्तों के कलात्मक संयोजन के साथ भारतीय मानवतावादी दृष्टि का भी संग्रथन है। पुस्तक में जायसी के प्रेम-निरूपण के माध्यम से प्रेमाधारित मानवतावाद का मौलिक विवेचन भी अभीष्ट है। प्रथम अध्याय में सूफ़ी सिद्धान्त और प्रेम-तत्व का विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में जायसी की प्रेम-पद्धति की तात्विक मीमांसा की गयी है। तृतीय अध्याय में जायसी के प्रेम के स्वरूप के सम्बन्ध में विचार किया गया है कि वह आध्यात्मिक है अथवा लौकिक! चतुर्थ अध्याय में यह दिखलाया गया है कि 'विरह प्रेम की कसौटी' है। पंचम अध्याय में प्रेम के प्रभाव और महत्त्व का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन-क्रम में जायसी द्वारा प्रतिपादित प्रेम के महत्त्व को कई सूत्रों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। षष्ठ अध्याय में मधुर भाव की साधना और जायसी के प्रेम-तत्त्व की विवेचना की गई है। जायसी के प्रेम-निरूपण में मधुर भाव की साधना के तत्व लक्षित होते हैं।

निबन्ध एवं कहानियाँ

डॉ० राकेश कुमार द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 120

सजि. : रु० 000.00 ISBN : 978-93-5146-062-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह पुस्तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित बी०काम० (ऑनर्स) के नवीन सेमेस्टर पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी प्रश्नपत्र के लिए तैयार की गयी है। बी०काम० के विद्यार्थियों का हिन्दी विषय से परिचय कराने के लिए इस प्रश्नपत्र का विधान किया गया है

अध्ययन की सुविधा के लिए पुस्तक को स्पष्ट रूप से तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। इसके प्रथम खण्ड में निबन्ध, द्वितीय खण्ड में कहानियाँ एवं तृतीय खण्ड में निबन्ध एवं कहानियों की समीक्षा है जो विद्यार्थियों को विषय की समझ और तैयारी के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसी क्रम में मूलपाठ के साथ निबन्धकारों एवं कहानीकारों का संक्षिप्त जीवन एवं कृतित्व परिचय भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी ऐसे साहित्यकारों के जीवन एवं रचनाकर्म से परिचत हों और प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

हिन्दी-साहित्य का इतिहास, काव्यशास्त्र एवं लिपि

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय
डॉ० परवीन निज़ाम अंसारी

प्रथम संस्करण : 2014 ई० पृष्ठ : 160

सजि. : रु० 000.00 ISBN : 978-93-5146-063-3
अजि. : रु० 000.00 ISBN : 978-93-5146-064-0
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्य मानव-मन की सहज अनुभूति एवं चेतना का मूर्त रूप है। इसका फलक व्यापक, विस्तृत एवं बहुआयामी है। सही अर्थों में साहित्य मानवता का पोषक एवं सामाजिक गतिविधियों का प्रस्तोता होता है। इसका मूल उपजीव्य हित-भावना है। समर्थ साहित्यकार प्राय: समाज के प्रति प्रतिश्रुत होते हैं। उनका कविकर्म सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में फलीभूत होता है।

साहित्य भावाकुल मन का प्रलाप नहीं है, इसका उद्देश्य बहुत ही व्यापक है। संवेदनाओं से आपूरित साहित्य को सुव्यवस्थित, सुसंस्कारित एवं निर्दोष प्रस्तुति के लिए आचार्यों ने काव्यशास्त्र का निर्माण किया है। साहित्य को मर्यादित करने में प्रस्तुति काव्यशास्त्र की सकारात्मक भूमिका होती है। केवल भावनाओं के अतिरेक को वाणी दे देना ही साहित्य-स्रष्टा का गुण-धर्म नहीं है। साहित्य की कुछ अपनी भी परिसीमा होती है। इसे काव्यशास्त्र के नियमों के सापेक्ष प्रस्तुत करना ही श्रेयस्कर होता है। इस ग्रन्थ में काव्यशास्त्र के मुख्य-मुख्य नियमों एवं विद्यार्थियों के लिए विहित काव्यांगों की विवेचना की गयी है।

तृतीय खण्ड के अन्तर्गत भाषा के स्वरूप का उद्घाटन किया गया है। व्यवस्थित भाषा से ही अभिव्यक्ति अपनी पूर्णता प्राप्त करती है। भाषा का यह परिष्कृत रूप, जो सम्प्रति व्यवहृत हो रहा है, इसका एक लम्बा इतिहास है। सदियों की विकास-यात्रा के बाद भाषा परिनिष्ठित हुई होगी। इसकी शब्द-सम्पदा का यह स्वरूप सहसा नहीं बना होगा। हिन्दी की समृद्धि का मूलाधार इसकी औदार्य प्रकृति है। हिन्दी की प्रतिष्ठा उसकी विभाषाओं एवं बोलियों की देन है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होती हुई आज हिन्दी इस रूप में व्यवहृत हो रही है। इसका दिग्दर्शन कराने का विनम्र प्रयास किया गया है।

मुख्यत: यह पुस्तक विद्यार्थियों की हित-भावना को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। अन्य यशस्वी लेखकों की पुस्तकों में इतना विस्तृत विवेचन कर दिया गया है कि ये पुस्तकें सामान्य विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य नहीं सिद्ध हो रही हैं। विद्यार्थियों के लिए सामान्य परिचय ही उनके आग्रह के अनुरूप है। इस दृष्टि से यह कृति निश्चय ही उपयोगी होगी।

भारत के पूर्व-कालिक सिक्के

परमेश्वरीलाल गुप्त

चतुर्थ संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 420

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-93-5146-057-2
अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-93-5146-058-9
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारत के पूर्व-कालिक इतिहास-निरूपण के निमित्त सिक्कों का सर्वाधिक महत्त्व है। इन सिक्कों पर अंकित आलेखों के माध्यम से अज्ञात तथ्य प्रकाश में आये और संदिग्ध समझे जाने वाले तथ्यों की पुष्टि भी हुई। इस प्रकार सिक्कों के माध्यम से प्राप्त जानकारी से इतिहास का प्रामाणिक स्वरूप प्रकाश में आया।

भारत में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के मुद्राशास्त्री (numismatist) डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने इस ग्रंथ में पूर्वकालीन (आरम्भ से 12वीं शती ई०) सिक्कों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

सिक्कों के ऐतिहासिक महत्त्व के परिप्रेक्ष्य में देश में लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने, जहाँ प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्यापन होता है, अपने स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम में इसे स्थान दिया है; कुछ विश्वविद्यालयों ने स्नातक कक्षा के लिए भी इसका ज्ञान आवश्यक माना है। विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को देखते हुए आवश्यक था कि राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस विषय पर विस्तृत पुस्तक लिखी जाय।

अत: पूर्वकालीन (आरम्भ से 12वीं शती ई०) सिक्कों से जो जानकारी प्राप्त हुई है और उनसे इतिहास का जो रूप उभरा है, उनके सम्बन्ध में अब तक जो कुछ भी लिखा गया है और जो लेखक के सामने आया है, उन सबको समन्वित कर यह पुस्तक रूपायित की गयी है। यह पुस्तक अपने आप में मौलिक है। विशेष रूप से आहत मुद्राओं वाला सम्पूर्ण अध्याय, अध्याय 7 में जनराज्यों की व्यवस्था प्रणाली का बिलगाव, अध्याय 9 में उत्तरवर्ती कुषाणों और कबायली-कुषाणों सम्बन्धी जानकारी को क्रमबद्ध करने का प्रयास लेखक के अपने अध्यवसाय व मौलिक शोध का परिणाम है।

सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन इतिहास की जानकारी किस प्रकार होती है, इसका विस्तृत विवेचन पुस्तक में किया गया है। इतिहास तथा पूर्व-कालिक सिक्कों के विद्यार्थियों, अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व

राष्ट्रिय पंडित श्री ब्रजवल्लभ द्विवेदी

द्वितीय संस्करण : 2014 ई०

पृष्ठ : 144

अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-93-5146-054-1
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय संस्कृति में, सनातन धर्म में षोडश संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं पुरुषार्थ चतुष्टय का विशिष्ट महत्त्व है। प्रस्तुत ग्रन्थ में इन्हीं का परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। गौतम धर्मसूत्र, मृगेन्द्रागम तथा पुराणों में भी 48 संस्कारों की चर्चा मिलती है। मनु (2.36-38) के अनुसार संस्कारों का विधान शरीर की शुद्धि के लिए किया गया है। इन संस्कारों से परिशुद्ध शरीर ब्रह्म के साक्षात्कार में समर्थ हो जाता है। 48 संस्कारों में से अन्तिम आठ आत्मगुण के नाम से प्रसिद्ध हैं। द्वैतवाद के अनुसार जीवात्मा को परमात्मा का सान्निध्य दिलाने के लिए इनका विनियोग किया जाता है।

आगमशास्त्र में दीक्षा नामक संस्कार का विशेष महत्त्व है। दीक्षा का अधिकारी कौन है? इस विषय में विभिन्न पक्ष हैं, किन्तु अन्तत: यह सिद्धान्त सर्वमान्य हो गया कि चांडाल को भी दीक्षा का अधिकार है। द्वैतवादी दर्शन इस सिद्धान्त को मान्यता देते हैं कि मोतियाबिन्द को हटाने के लिए जैसे वैद्य के व्यापार की अपेक्षा रहती है, उसी तरह आत्मा के स्वरूप को आवृत कर देने वाले मलों को हटाने के लिए दीक्षा नामक संस्कार की अपेक्षा है। व्यक्ति जिस धर्म में दीक्षित होता है, तदनुसार वह जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव, शाक्त आदि कहलाने लगता है। कूर्मपुराण (1.3.98) में वर्णित त्रिविध सम्प्रदायों की व्याख्या हम इसी पद्धति से कर सकते हैं। इसे यहाँ तथा अन्यत्र (वीरशैव मत) अतयाश्रमी व्यवस्था कहा गया है। सन्तों की दृष्टि के अनुसार मानव जाति में ज्येष्ठ-कनिष्ठ भाव को हम हटा दें, तो वर्णाश्रम व्यवस्था की सार्वभौमिकता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। विद्या, बल, व्यापार और सेवा में मानवता विभक्त है। इसी तरह ब्रह्मचर्य की नींव पर ही गृहस्थ, वानप्रस्थ (अपने-अपने धर्म के प्रचार के लिए समर्पित जन) और संन्यासी धर्म-मार्ग का अनुसरण कर सकता है। पूरे समाज के सुव्यवस्थित होने पर हम अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष को भी इसी धरती पर उतार सकते हैं।

संगोष्ठी/लोकार्पण

विश्व पुस्तक मेले में 'उद्भ्रांत' की दो पुस्तकों का विमोचन

विश्व पुस्तक मेले में 21 फरवरी को पुस्तकों के विमोचन का सिलसिला चला। हॉल संख्या 18 में उद्भ्रांत की पुस्तक 'आलोचक के भेस में' व 'स्मृतियों के मील पत्थर' का विमोचन आलोचक डॉ० खगेंद्र ठाकुर ने किया। विश्वविद्यालय प्रकाशन ने ये पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस अवसर पर उद्भ्रांत ने कहा कि 'आलोचक के भेस में' समीक्षाओं का संग्रह है, जबकि 'स्मृतियों के मील पत्थर' में वरिष्ठ साहित्यकारों से जुड़े संस्मरण हैं। कार्यक्रम में अशोक त्रिपाठी, ओम निश्चल, डॉ० पुष्पिता अवस्थी समेत अन्य साहित्यकार उपस्थित थे। हॉल संख्या आठ में राष्ट्रवादी कवि हरिओम पंवार ने कवि भुवनेश सिंघल की पुस्तक 'ये जरूरी था' का लोकार्पण किया। पुस्तक मेले में साहित्यकार मृदुला गर्ग ने निर्मला भुराडिया द्वारा लिखित 'गुलाम मंडी' पुस्तक का विमोचन किया।

'भारतीय पुरातत्व' का हुआ विमोचन

सारनाथ, वाराणसी स्थित भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में विगत दिनों विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित डॉ० नीहारिका व अजय श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय पुरातत्व' का विमोचन हुआ।

इस अवसर पर भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक प्रवीण श्रीवास्तव ने कहा कि इस किताब में पुरातत्व, कला, इतिहास, संस्कृति सहित अनेक पहलुओं का संगम है। अतिरिक्त महानिदेशक डॉ० बी०आर० मणि ने कहा कि ऐसी कई पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गई हैं। यह किताब हिन्दी बेल्ट के लिए सर्वमान्य होगी। डॉ० पी०के० मिश्र, डॉ० अर्चना शर्मा, डॉ० चंदा रानी, डॉ० अशोक सिंह ने विचार व्यक्त किए।

'एक सुबह और मिल जाती' लोकार्पित

वाराणसी। केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय परिसर में विगत 13 मार्च को आयोजित एक समारोह में साहित्यकार डॉ० बाबूराम त्रिपाठी की पुस्तक 'एक सुबह और मिल जाती' का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने कहा कि मौसम बदलते रहे, आँधी-तूफान आते रहे लेकिन बाबूराम की लेखनी चलती रही। समारोह के अध्यक्ष कुलपति प्रो० नवांग समतेन ने कहा कि पुस्तक की कहानी समाज के हर व्यक्ति पर लागू होती है। विशिष्ट अतिथि साहित्यकार डॉ० नीरजा माधव ने कहा कि साहित्य समाज को जोड़ने का काम करता है।

डॉ० अवधेश, डॉ० अनुराग त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु उपाध्याय, प्रो० श्रद्धानंद, प्रो० जीतेन्द्र नाथ, डॉ० रमेश चन्द्र पाण्डेय, लवकुश मिश्रा आदि ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ० राम सुधार सिंह ने किया व धन्यवाद प्रकाश पराग मोदी ने किया। कथा-संग्रह विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित किया गया है।

संजोई जयशंकर प्रसाद की साधना

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के राधाकृष्णन सभागार में विगत दिनों महाकवि जयशंकर प्रसाद की साहित्य साधना रेखांकित की गई तो कवियों ने रचनाओं का पाठ किया। हिन्दी विभाग (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के विद्यार्थियों की ओर से महाकवि जयशंकर प्रसाद के 125वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में दो दिनी समारोह के उद्घाटन पर वरिष्ठ कवि लीलाधर जगूड़ी ने कहा कि प्रसाद की कविताई सांस्कृतिक चिंतन से उपजा अनुभव है। अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्र नाथ राय, स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो० बलिराज पाण्डेय व संचालन सुशील कुमार सुमन ने किया। इसके बाद वरिष्ठ कवि ज्ञानेंद्रपति की अध्यक्षता में काव्यपाठ हुआ।

चेतना की भाषा है भोजपुरी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एकेडमिक स्टाफ कॉलेज में विगत दिनों भोजपुरी साहित्य के प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि तिलका मांझी विश्वविद्यालय, भागलपुर के कुलपति प्रो० आर०एस० दुबे ने भोजपुरी साहित्य को और समृद्ध करने पर जोर दिया। अध्यक्षता कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने की। प्रो० प्रमोद कुमार सिंह, प्रो० बलिराज पाण्डेय आदि ने विचार व्यक्त किए। 21 दिनी पाठ्यक्रम में 26 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

लोक परम्परा में निहित 'जीवन मूल्य'

हिन्दी विभाग (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के तत्वावधान में विगत दिनों 'लोक साहित्य व संस्कृति : सामर्थ्य और चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लोक साहित्य व संस्कृति में निहित मर्मों को सामने लाने की कोशिश की गई। इसके सामर्थ्य और चुनौतियों पर भी मंथन हुआ। विगत दिनों दो दिवसीय इस संगोष्ठी के उद्घाटन पर वक्ताओं के विचारों का मूल था कि लोक परम्परा एवं साहित्य में जीवन मूल्य की गहराई, श्रेष्ठता, मौलिकता, राग, गूंज तथा उत्पीड़ित जनों की आवाज सुरक्षित है। लोक नैसर्गिकता से जोड़ता है और कृत्रिमता से मुक्त करता है। 'लोक' की यह गाथा अंग्रेजी के 'फोक' का पर्याय नहीं है।

मुख्य अतिथि मारीशस से आई सरिता बुधू ने मारीशस में लोक साहित्य के संरक्षण की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि प्रो० राजेश्वर आचार्य ने लोकगीतों के विन्यास, शब्दों और लयों के अर्थ की गीतमय प्रस्तुति की। इस अवसर पर प्रो० वशिष्ठ अनूप के गजल संग्रह 'तेरी आँखे बहुत बोलती हैं' तथा 'शब्दार्थ' पत्रिका के 'डॉ० शिवकुमार मिश्र विशेषांक' का विमोचन किया गया। अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० एम०एन० राय, स्वागत हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० बलिराज पाण्डेय, विषय प्रवर्तन संयोजक प्रो० वशिष्ठ अनूप व संचालन सचिव डॉ० प्रभाकर सिंह ने किया। इसके पश्चात् चले सत्रों में अरुणेश नीरन, प्रो० सीताराम दुबे, प्रो० चंदा बेन, प्रो० कपिलेदव लागोछाने, डॉ० नीरजा माधव, डॉ० नीरज खरे, प्रो० रतन कुमार पाण्डेय, डॉ० शिव प्रसाद पौडियाल, डॉ० सुमेध थेरो, डॉ० प्रकाश उदय, डॉ० सत्यपाल शर्मा ने विचार व्यक्त किये।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल डॉ० माता प्रसाद ने लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर पर प्रकाश डाला तो विशिष्ट अतिथि प्रो० वीरेन्द्र नारायण यादव ने भिखारी ठाकुर और लोक नाट्य परम्परा की चर्चा की।

प्रो० अनिल कुमार राय ने लोक साहित्य की विविधता और उसके सामर्थ्य को रेखांकित किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि लोक साहित्य की जनधर्मी परम्परा में प्रतिरोध की संस्कृति निहित है।

साहित्य की समीक्षा के लिए दृष्टि जरूरी

वाराणसी। संत साहित्य समझने के लिए सन्दर्भ को ध्यान रखना जरूरी है। साथ ही साहित्य की समीक्षा करते समय उस समय को भी दृष्टि में रखना होगा जब वह साहित्य लिखा गया था। समय व उसके सन्दर्भ को केन्द्र में रखकर ही साहित्य का सही आंकलन या समीक्षा की जा सकती है।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में विगत दिनों आयोजित 'संत काल व प्रो० वासुदेव सिंह' विषयक संगोष्ठी का यही निष्कर्ष रहा। प्रो० वासुदेव सिंह की स्मृति में हिन्दी विभाग के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० रतन कुमार पाण्डेय ने कहा कि वर्तमान सन्दर्भ के आधार पर पहले के लिखे ग्रन्थों का आंकलन करना उचित नहीं होगा। प्रो० वासुदेव सिंह की आलोचना दृष्टि इसी अर्थों में ज्यादा गम्भीर है। उन्होंने उसी परिस्थितियों में संतों की वाणी का मूल्यांकन करने का प्रयास किया। गोवा विश्वविद्यालय के प्रो० बी०डी० मिश्र ने कहा कि प्रो० वासुदेव सिंह श्रेष्ठ आलोचक के साथ ही श्रेष्ठ इतिहासकार के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रभारी कुलपति प्रो० सत्येन्द्रनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि प्रो० वासुदेव सिंह एक श्रेष्ठ समीक्षक, कुशल आलोचक के साथ ही श्रेष्ठ अध्यापक भी थे।

सांसों की सरगम, वीणा की धड़कन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित संगीत एवं मंचकला संकाय में संगीत साधकों ने विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्यों को अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से प्रणाम किया। ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में एक ओर जहाँ प्रस्तुति देने वाले कलाकारों की हर सांस एक सरगम छेड़ रही थी वहीं श्रोताओं के धड़कनों की वीणा उनका साथ देती प्रतीत हुईं।

कार्यक्रम की शुरुआत में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्यों पर बनाई गई एक फिल्म दिखाई गई। इसमें यहाँ की गौरवशाली शिक्षक परम्परा का संगीतयुक्त बेहतरीन फिल्मांकन था। इसके बाद विभिन्न कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

कनिंघम का आभारी है भारत का इतिहास

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला भवन में सर एलेक्जेंडर की 200वीं जयन्ती पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमन्त्री डॉ० मनमोहन सिंह की पुत्री व दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो० उपिन्दर सिंह ने पुरातत्व सर्वेक्षण के जनक सर एलेक्जेंडर कनिंघम के बारे में बताया कि कनिंघम के प्रति भारत का इतिहास सदैव आभारी रहेगा। वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सर एलेक्जेंडर कनिंघम की 200वीं जयन्ती पर आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने बुद्ध से सम्बन्धित पुरावशेषों व जेम्स फर्ग्युसन की किताब 'द आर्कियोलॉजी आफ इंडिया विद स्पेशल रेफरेंस टू बाबू राजेन्द्रलाल मित्रा' के बारे में विस्तार से बताया। इस किताब में कनिंघम के योगदान का आरम्भिक अध्ययन है। बौद्ध कला केन्द्रों की खोज व संरक्षण का कार्य भी कनिंघम ने ही किया था।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अतिरिक्त महानिदेशक डॉ० बी०आर० मणि ने कहा कि सर एलेक्जेंडर कनिंघम का भारत के प्रति योगदान निश्चित ही अतुलनीय है। स्वागत कला इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो० ए०के० सिंह, संचालन डॉ० ज्योति रोहिला राणा, विषय स्थापना आयोजन सचिव प्रो० अतुल त्रिपाठी ने किया।

चुनौतियों से भरी हुई है गजल की राह

साहित्यिक संघ द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के पं० सुधाकर पाण्डेय स्मृति कक्ष में विगत दिनों संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें हिन्दी गजल की राह में आ रही चुनौतियों पर विचार विमर्श किया गया। भोपाल से आए गजलकार जहीर कुरैशी ने कहा कि हिन्दी गजल के सामने आजकल दो चुनौतियाँ हैं।

एक तो परम्परागत गजलकारों से जो इसे पुराने फ्रेम से जरा सा भी विचलित नहीं देखना चाहते हैं। वहीं दूसरी ओर काव्य भाषा भी बड़ी चुनौती के रूप में सामने है। हिन्दी गजल संघर्ष की प्रक्रिया विकसित हो गई है जो इन चुनौतियों का सामना कर लेगी लेकिन ध्यान रखना होगा कि इसके आदर्श रूप में अरबी मानक को नकारा नहीं जा सकता। अध्यक्षता प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी और संचालन डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

अथाह सागर है कर्मकांड

भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जन्म लेने से मृत्यु तक 16 संस्कार होते हैं। कोई भी संस्कार कर्मकांड के बिना सम्भव नहीं है। हमारे वेदों में करीब एक लाख मन्त्र हैं। कर्मकांड में अकेले करीब अस्सी हजार मन्त्र हैं। इस प्रकार कर्मकांड अथाह सागर है।

वाराणसी के मीरघाट स्थित राजस्थान संस्कृत कालेज में विगत दिनों 'बृहद् कर्मठगुरु' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए यह बातें वक्ताओं ने कहीं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० आंजनेय शास्त्री ने कहा कि पूरे कर्मकांड को किसी एक ग्रन्थ में समेटना सम्भव नहीं है, लेकिन वेदाचार्य डॉ० अशोक कुमार गौड़ ने अपनी 'बृहद् कर्मठगुरु' नामक पुस्तक के माध्यम से गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।

हिन्दी में विज्ञान लेखन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मातृभाषा हिन्दी में विज्ञान लेखन को मजबूती देने की कड़ी में विगत दिनों विशेषज्ञ एक मंच पर आए। हिन्दी प्रकाशन समिति की ओर से 'हिन्दी में विज्ञान लेखन कला के विविध आयाम' विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं के विचारों का मूल था कि विज्ञान के कदम मजबूती से हिन्दी की राह पर पड़ने चाहिए।

मुख्य अतिथि विज्ञान परिषद प्रयाग, इलाहाबाद के प्रधानमन्त्री प्रो० शिवगोपाल मिश्र ने अनुरोध किया कि वर्तमान वैज्ञानिक भावी पीढ़ी के लिए प्रेरक बनें। विशिष्ट अतिथि आइआइटी के पूर्व निदेशक प्रो० एस०एन० उपाध्याय ने कहा कि हिन्दी के माध्यम से वैज्ञानिक उपलब्धियों को सामान्य जन तक पहुँचाया जा सकता है।

उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा स्तर से ही सही हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो० ए०के० श्रीवास्तव ने कहा कि गुरुजनों की प्रेरणा से ही हिन्दी में विज्ञान का विकास सम्भव है।

योग वशिष्ठ, भारतीय चिंतन पर विमर्श

वाराणसी के सामनेघाट स्थित ज्ञान प्रवाह में विगत दिनों योग वशिष्ठ और भारतीय चिंतन परम्परा पर विमर्श हुआ। साहित्य अकादमी के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि योग वशिष्ठ मात्र दर्शन या आध्यात्म का ग्रन्थ नहीं बल्कि विराट महाकाव्य और सत्संग का महिमागान है। यह धर्म-दर्शन, तत्व विचार, आख्यान, देश-काल का विश्वकोश है। इसके वृहद कलेवर में गीता, उपनिषद, वेदान्त आदि अनेक ग्रन्थ समाहित हैं। प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने वेद की परम्परा में योग वशिष्ठ की भूमिका रेखांकित की तो सुधांशु शेखर शास्त्री ने कहा कि यह वेद के विषयों का योग है। वागीश शुक्ला आदि ने विचार व्यक्त किए।

यहाँ तुलसी हैं तो कबीर भी

वाराणसी। काशी के जन में शास्त्र है तो लोक भी है। यहाँ तुलसी हैं तो कबीर भी। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में 'भक्तिकाल : पाठ के विविध आयाम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सार यही रहा।

हिन्दी विभाग के तत्वावधान में 'भक्ति काल की भाषा : शास्त्र की मर्यादा और लोक सामर्थ्य' विषयक संगोष्ठी के समापन सत्र में विगत दिनों मुख्य वक्ता हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो० रामदरश राय ने कहा कि कबीर भाषा के ऐसे प्रयोगधर्मी थे जो शास्त्रीय जकड़बंदी से भाषा को मुक्त करने में सहायक साबित हुए। विशिष्ट वक्ता काशी नरेश पीजी कालेज, भदोही के डॉ० क्षमाशंकर पाण्डेय ने कहा कि सन्तों की भाषा प्रयोगधर्मी है। अध्यक्षता भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, बिहार के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० प्रमोद कुमार सिंह ने की। विभिन्न तीन सत्रों में आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक प्रो० चौथीराम यादव, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० जितेन्द्र नाथ मिश्र ने की। मुख्य वक्ता प्रो० बलिराज पाण्डेय, प्रो० रतन कुमार पाण्डेय, प्रो० जंग बहादुर पाण्डेय व विशिष्ट वक्ता कथा लेखिका डॉ० नीरजा माधव, डॉ० रामसुधार सिंह आदि ने विचार व्यक्त किया। संचालन डॉ० निरंजन सहाय एवं धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष डॉ० अवधेश कुमार सिंह ने किया।

साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ

अलीगढ़ में के०पी० सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत वर्ष 2013 का व्याख्यान सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री, राजनीतिक विश्लेषक और विकासशील समाज अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ० अभय कुमार दुबे द्वारा 'साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ' विषय पर दिया गया। उन्होंने कहा कि इतिहास लेखन की परम्परा कई चरणों में रही है। अंग्रेज इतिहासकारों ने प्राच्यवादी इतिहास लिखा जिसमें भारतीयों को पिछड़ा और असंस्कृत बताते हुए पश्चिमी समाज को उन्नत और प्रगतिशील बताया। इसके विरोध में भारतीय इतिहासकारों ने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से इतिहास लिखा। आधुनिक इतिहास समाजशास्त्रीय इतिहास है जिसमें आर्थिक व्यवस्था पर आधारित निष्कर्षों के अतिरिक्त इतिहास की चेतना को अधिक विस्तार दिया गया है

तथा इसे भाषा-संस्कृति आदि लोक के सभी स्वरूपों से भी जोड़ा गया है।

डॉ० अभय कुमार दुबे के०पी० सिंह मेमोरियल चैरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के प्रोफेसर रामवीर सिंह ने की।

'तेलुगु साहित्य का हिन्दी पाठ'

''भारतीय भाषाओं में तेलुगु भाषा का भाषिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है तथा तेलुगु साहित्य का हिन्दी में बड़ी मात्रा में अनुवाद भी हो चुका है जो तेलुगु संस्कृति को निकट से जानने-समझने के लिए बहुत सहायक है।'' पिछले दिनों हैदराबाद में ये विचार डॉ० एम० वेंकटेश्वर ने प्रो० ऋषभ देव शर्मा की समीक्षा पुस्तक 'तेलुगु साहित्य का हिन्दी पाठ' का लोकार्पण करते हुए प्रकट किए। इस पुस्तक में तेलुगु साहित्य का विवेचन हिन्दी में अनूदित पाठ के आधार पर किया गया है जो तेलुगु के प्रति लेखक की सहज संवेदना का प्रतीक है।

शकुन्तला सिंह की पुस्तकें लोकार्पित

कुछ समय पहले लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम में लेखिका डॉ० शकुन्तला सिंह के सद्य:प्रकाशित उपन्यास 'मुक्ति' एवं शोध-ग्रन्थ 'बुद्ध का जीवन एवं बौद्ध प्रतिमाएँ' का लोकार्पण शम्भुनाथ (पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान) और संजीव जायसवाल 'संजय' के हाथों सम्पन्न हुआ।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान

पण्डित विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में स्थापित 'विद्याश्री न्यास' एवं भारतीय मनीषा के गुरुत्रय पण्डित मधुसूदन ओझा, पण्डित मोतीलाल शास्त्री एवं ऋषि कुमार मिश्र की स्मृति में स्थापित वैदिक ज्ञान-विज्ञान हेतु संकल्पित 'श्री शंकर शिक्षायतन' और ललित कला विभाग, महात्मा गाँधी विद्यापीठ वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में पाँच अकादमिक सत्रों में 'पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद' तथा 'संस्कृति और कला' विषय पर पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति-व्याख्यान और राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन ललित कला विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के सभागार में सम्पन्न हुआ।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के रूप में 'संस्कृति और कला की भारतीय अवधारणा' विषय पर केन्द्रित अपने व्याख्यान में श्री कपिल तिवारी ने स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, गोपीनाथ कविराज, वासुदेव शरण अग्रवाल एवं आनन्द कुमार स्वामी की वैचारिकी के आधार पर भारतीय मनीषा के वैश्विक प्रभावों को रेखांकित किया।

पाँच सत्रों में चलने वाले इस सारस्वत आयोजन में संयोजन और संचालन का दायित्व श्री दयानिधि मिश्र, सचिव, विद्याश्री न्यास ने निभाया।

पुस्तक 'अदबी संगम' का विमोचन

एजाज लिटरेरी सोसाइटी (रजि०) के तत्वावधान में डॉ० माहे तिलत सिद्दीकी की पुस्तक 'अदबी संगम' का विमोचन स्टॉक एक्सचेंज सभागार, कानपुर में केन्द्रीय कोयला मन्त्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल के कर कमलों द्वारा किया गया।

'शब्द आबद्ध' कृति लोकार्पित

चेन्नई में तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में डॉ० वर्षा पुनवटकर द्वारा लिखे विविध आलेखों के संकलन 'शब्द आबद्ध' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री मधु धवन, हबीबुल्लो रज्बो (तजाकिस्तान), लेखिका-अनुवादक आकुची (जापान) सहित लगभग 400 साहित्यकार उपस्थित थे।

'ऊँट के नीचे पहाड़' कृति लोकार्पित

सोनभद्र में एन०टी०पी०सी०, शक्तिनगर के डॉ० अम्बेडकर भवन में व्यंग्यकार श्री अजय चतुर्वेदी 'कक्का' की हास्य-व्यंग्य कृति 'ऊँट के नीचे पहाड़' का लोकार्पण सर्वश्री जयनारायण सिंह एवं मुनीर बख्श आलम ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

वर्धा में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अदम की कविता : जनरुचि और पठनीयता का सन्दर्भ' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री उदयप्रताप सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता श्री विभूति नारायण राय ने की। उद्घाटन वक्तव्य प्रो० केदारनाथ सिंह एवं बीज वक्तव्य श्री दूधनाथ सिंह ने दिया। पहले सत्र 'प्रतिरोध का स्वर और अदम' में सर्वश्री रमेश यादव, जैनेंद्र कुमार पाण्डेय, जय कौशल, विमलप्रकाश वर्मा, उमेश कुमार सिंह तथा गंगाप्रसाद विमल ने अपने विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र 'हिन्दी गजल की परम्परा में अदम' की अध्यक्षता श्री दूधनाथ सिंह ने की। सर्वश्री गोविंद प्रसाद, अखिलेश कुमार राय, शमशेर खुद, दिलीप शाक्य, रामानुज अस्थाना तथा दूधनाथ सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ० अशोक त्रिपाठी ने किया। तीसरे सत्र 'अदम की राजनैतिक चेतना' की अध्यक्षता डॉ० सुधाकर अदीब ने की। सर्वश्री सूरज पालीवाल, दिनेश कुशवाह, माणिक मृगेश, अनिल कुमार सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ० जयप्रकाश 'धूमकेतु' ने किया।

चौथे सत्र 'समकालीन कविता और अदम' की अध्यक्षता प्रो० गोविंद प्रसाद ने की। सर्वश्री अनवर अहमद सिद्दीकी व रामप्रकाश यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। अनेक छात्रों ने शोध-प्रपत्रों का वाचन किया। संचालन डॉ० रामानुज अस्थाना ने किया। आभार ज्ञापन डॉ० कैलाश खामरे ने किया।

विद्यापति स्मृति संध्या सम्पन्न

विगत दिनों रामकोट स्थित महिला नवजीवन मंडल के सरोजिनी हॉल में मिथिला सामाजिक मंच, हैदराबाद द्वारा 'विद्यापति स्मृति संध्या' का आयोजन किया गया। सर्वश्री आर०के० मिश्र, वी० सुब्बाराव, अतुल प्रणय, धीरेन्द्र प्रताप सिंह, शम्भूनाथ झा, विनोद झा तथा अजीत कुमार ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर 'नवजागृति' नामक स्मारिका का विमोचन किया गया।

'चाणक्य का नया घोषणापत्र' का लोकार्पण

बिहार के मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार और लेखक पवन कुमार वर्मा की पुस्तक 'चाणक्याज न्यू मेनिफेस्टो टू रिसोल्व द क्राइसिस विदिन इंडिया' का हिन्दी संस्करण 'चाणक्य का नया घोषणापत्र : भारत के संकट का समाधान' नाम से आया है। अनुवाद प्रकाश दीक्षित ने किया है। पटना स्थित ए०एन० सिन्हा इंस्टीच्यूट में इस पुस्तक का विमोचन कवि आलोक धन्वा, शैवाल गुप्ता, डी०एन० दिवाकर और इम्तियाज अहमद ने किया।

ज़किया ज़ुबैरी की पुस्तक 'साँकल' का विमोचन

नई दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर की एनेक्सी में लन्दन में रहनेवाली लेखिका ज़किया ज़ुबैरी के कहानी संग्रह 'साँकल' का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे चर्चित व्यंग्यकार व 'व्यंग्य यात्रा' के सम्पादक प्रेम जनमेजय। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० गंगा प्रसाद ने की। संयोजक की भूमिका में लंदनवासी कहानीकार तेंजेद्र शर्मा थे।

'युगान्तर के फूल' का लोकार्पण

पटना में राज्यपाल डॉ० डी०वाई० पाटील ने विगत दिनों राजभवन सभागार में कुमार मिथिलेश प्रसाद सिंह के कविता-संग्रह 'युगान्तर के फूल' का विमोचन किया।

'कालजयी स्वामी विवेकानंद' का विमोचन

शिक्षक संचेतना, राजभाषा संघर्ष समिति तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित पुस्तक 'कालजयी स्वामी विवेकानंद' का विमोचन शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन के सभागार में आयोजित समारोह में सम्पन्न हुआ। पुस्तक का विमोचन

वरिष्ठ साहित्यकार श्री कृष्णकुमार अष्ठाना (इंदौर) विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो० शैलेन्द्रकुमार शर्मा, पूर्व प्राचार्य श्री ब्रजकिशोर शर्मा एवं साहित्यकार श्रीमती क्रांति कनाटे (बड़ौदा) ने किया।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के सेवानिवृत्ति के अवसर पर डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्कृत विभाग में 'संस्कृत की अभिनव रचनाधर्मिता और आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी' पर आधारित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विगत दिनों हुआ। कार्यक्रम में प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, मुख्य अतिथि तथा नई दिल्ली से पधारे पद्मश्री विभूषित डॉ० रमाकान्त शुक्ल, सारस्वत अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि प्रो० के०बी० पण्डा, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० एन०एस० गजभिये, कुलपति डॉ० हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने की। विभागाध्यक्ष प्रो० कुसुम भूरिया दत्ता ने कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं स्वागत भाषण किया।

इस अवसर पर (1) संस्कृत के अभिनव रचनाधर्मी : आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, (2) संस्कृत के अर्वाचीन साहित्य के विकास में पंडित प्रेमनारायण द्विवेदी का योगदान, (3) संस्कृत साहित्य में पर्यावरण पुस्तकों का विमोचन किया गया।

प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि विद्वान कभी सेवानिवृत्त नहीं होता। वही श्रेष्ठ कवि और मनुष्य हो सकता है जिसका सब कुछ लोक हित में समर्पित होता है। प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति के रूप में संस्कृत को, संस्कृतज्ञों के स्वाभिमान को उठाया, वह सराहनीय है। प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी क्रान्तदर्शी आचार्य हैं। पद्मश्री डॉ० रमाकान्त शुक्ल ने कहा कि संस्कृत भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए है। संस्कृत रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर समाज को संरक्षित करने का उपाय सुझाया जाता है।

प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि शिष्यों के बिना गुरु और गुरु के बिना शिष्य अधूरे हैं। गुरु से केवल विद्या की अपेक्षा रखने वाले शिष्य श्रेष्ठ हैं। सागर विश्वविद्यालय से मेरा सम्बन्ध बना रहेगा। प्रो० एन०एस० गजभिये ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यदि संस्कृत भारत की राष्ट्र भाषा होती तो मुझे प्रसन्नता होती साथ ही संस्कृत में विद्यमान ज्ञान के भण्डार को जनसुलभ बनाने को आवश्यक बताया। द्वितीय सत्र में 14 शोध पत्र पढ़े गये। इसी तारतम्य में संस्कृत कवि समवाय का भी आयोजन किया गया।

राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यान

सी०एस०आइ०आर०—भापेसं, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा 'राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला' के 17वें व्याख्यान में उत्तराखंड की जानी-मानी शिक्षाविद् प्रो० सुधा रानी पाण्डेय, पूर्व कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार मुख्य अतिथि थीं। 'वर्तनी का मानकीकरण एवं अनुवाद' विषय पर बोलते हुए उन्होंने हिन्दी के राजभाषा बनने की ऐतिहासिक एवं संवैधानिक पृष्ठभूमि की चर्चा की और राजभाषा सम्बन्धी व्यावहारिक समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह का संचालन करते हुए संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी डॉ० दिनेश चन्द्र चमोला ने कहा कि अनुवाद की बैसाखी की बजाय मौलिक लेखन राजभाषा के व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए बहुत आवश्यक है। आज का समूचा ज्ञान-विज्ञान अनुवाद के माध्यम से ही पाठकों को सुलभ हो रहा है। इस प्रकार के व्याख्यान ज्ञान-वर्धन के साथ-साथ, मौलिक हिन्दी-लेखन को भी उत्प्रेरित करने में नितान्त सहायक हैं।

सिलचर में विश्व हिन्दी दिवस समारोह

असम विश्वविद्यालय, सिलचर के राजा राममोहन राय प्रशासनिक भवन के प्रेमेंद्र मोहन गोस्वामी सभाकक्ष में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो० सोमनाथ दासगुप्ता ने व उद्घाटन कुलपति ने किया। इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा 'राजनीति में गिरावट विद्वानों का अभाव या कुछ अन्य' विषय पर बोलते हुए कुलपति ने कहा कि ''सामाजिक गिरावट के कारण राजनैतिक गिरावट है, किन्तु इसका एक बहुत बड़ा कारण भ्रष्टाचार है, जिसके निदान हेतु उचित प्रयास की आवश्यकता है।''

प्रो० विश्वनाथ प्रसाद ने राजनीति को सीमित धर्म बताते हुए कहा कि बिना राजनैतिक सुधार के देश का विकास सम्भव नहीं, राजा ही समाज को दिशा देता है। नैतिक मूल्यों की कमी के कारण आदर्श को स्थापित नहीं किया जा सकता, स्वार्थवृत्ति को त्याग, मानव धर्म को राजनीति का पर्याय बनाना होगा। परिचर्चा में विचार रखते हुए प्रो० नित्यानंद पाण्डेय ने कहा—''प्राचीन काल से प्रशासन राज-धर्म के अनुकूल प्रतिपालित होता था, जो नीति एवं नियमों पर आधारित था, इन मूल्यों एवं मानदण्डों में गिरावट ही राजनीति के पतन का कारण है। नैतिक मूल्यों एवं चारित्रिक सुधार हेतु विद्वानों की भूमिका वरेण्य है।''

इस अवसर पर एक काव्य-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ० शुभदा पाण्डेय ने अपनी स्वरचना पाठ के साथ किया।

डॉ० नीरजा माधव की पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली। बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा ने विगत दिनों उपन्यासकार डॉ० नीरजा माधव की पुस्तक 'देनपा : तिब्बत की डायरी' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर दलाई लामा ने कहा कि यह पुस्तक तिब्बत की पीड़ा को लोगों तक पहुँचाएगी।

प्रकाशक प्रभात प्रकाशन के प्रमुख प्रभात कुमार ने लेखिका को बधाई देते हुए कहा कि भारत और तिब्बत के सांस्कृतिक सम्बन्ध काफी पुराने हैं। यह पुस्तक तिब्बत की मुक्ति साधना में मील का पत्थर साबित होगी।

साहित्य व संस्कृति से समृद्ध रहा है मध्यकालीन समाज

वाराणसी। वर्तमान दौर बाजार व पूंजीवाद के शिकंजे में है। इसके चलते समाज में तमाम विसंगतियाँ व्याप्त हैं जबकि मध्यकालीन समाज में साहित्य व संस्कृति काफी समृद्धशाली रही।

आर्य महिला पीजी कॉलेज में 'साहित्य, कला व संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में मध्यकालीन समाज' विषयक आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में विगत दिनों ये बातें वक्ताओं ने कहीं।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० नन्द किशोर पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० सूर्यनाथ दीक्षित, प्रो० अवधेश प्रधान सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ० बृज बाला सिंह व धन्यवाद ज्ञापन सरिता मिश्र ने किया।

पाँच दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

10-14 मार्च को इलाहाबाद के विज्ञान परिषद् सभागार में अरविन्द स्मृति न्यास द्वारा आयोजित 'समाजवादी संक्रमण की समस्याएँ' विषयक पाँच दिवसीय संगोष्ठी में विषय के विभिन्न आयामों पर कई महत्त्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत किए गए। 'सोवियत संघ में सामाजिक प्रयोगों' पर पत्रिका 'आह्वान' के सम्पादक श्री अभिनव सिन्हा, 'चीन में समाजवादी निर्माण, सांस्कृतिक क्रान्ति व माओवाद' पर पत्रिका 'प्रतिबद्ध' के सम्पादक श्री सुखविन्दर, 'स्तालिन और सोवियत समाजवाद' पर डॉ० अमृतपाल, 'उत्तर मार्क्सवादियों के कम्युनिज्म' पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सर्वश्री शिवानी एवं बेबी कुमारी, 'क्यूबा, वेनेजुएला आदि के परिधिगत प्रयोग' पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सर्वश्री सनी सिंह एवं अरविंद राठी, 'सोवियत एवं चीनी पार्टियों के बीच चली महान् बहस' पर श्री राजकुमार, 'माओवाद एवं माओ विचारधारा के प्रश्न' पर श्री हर्ष ठाकोर, 'यूरोपीय वाम के संकट' पर वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी के श्री मिथिलेश कुमार तथा 'समाजवाद संक्रमण एवं नेपाली क्रान्ति का सवाल' पर नेपाल की

राजनीतिक कार्यकताओं की टीम द्वारा प्रपत्र प्रस्तुत किए गए।

'बालवाटिका' विशेषांक लोकार्पित

विगत दिनों गाजियाबाद में डॉ० हरिकृष्ण देवसरे के जन्मदिवस के अवसर पर राजस्थान की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका 'बालवाटिका' द्वारा बाल साहित्य के पुरोधा डॉ० हरिकृष्ण देवसरे पर केन्द्रित मार्च 2014 के विशेषांक का लोकार्पण सर्वश्री विभा देवसरे, भैरूँलाल गर्ग, मधु पंत तथा दिविक रमेश ने डॉ० देवसरे के निवास पर किया।

'मोदी मन्त्र' कृति लोकार्पित

विगत दिनों दिल्ली में पत्रकार श्री हरीश चन्द्र बर्णवाल की नरेन्द्र मोदी पर लिखी पुस्तक 'मोदी मन्त्र' के लोकार्पण कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी, भाजपा प्रवक्ता श्रीमती मीनाक्षी लेखी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

'पुरस्कृत बच्चों की गौरव गाथाएँ' लोकार्पित

विगत दिनों दिल्ली में हरियाणा भवन में हरियाणा की शहरी विकास एवं स्थानीय निकाय मन्त्री श्रीमती सावित्री जिंदल ने बाल साहित्यकार श्री संजीव गुप्ता की पुस्तक 'पुरस्कृत बच्चों की गौरव गाथाएँ' का लोकार्पण किया।

दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

विगत दिनों रायपुर में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग द्वारा दो दिवसीय 'फिल्म मेकिंग, मीडिया और महिलाएँ' विषयक कार्यशाला के समापन में सर्वश्री मालविका जोशी, रीता वेणुगोपाल, सौम्या शर्मा एवं सच्चिदानंद जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर छात्रों द्वारा निर्मित कामकाजी महिलाओं पर आधारित 'छोटी सी आशा' का विमोचन हुआ और छात्रों की श्रेष्ठ तीन फिल्मों 'चिराग तले अँधेरा', 'नीनी द विनर' तथा 'मुझे इंसाफ मिला' को सम्मानित किया गया।

बाबू गुलाबराय जयंती समारोह सम्पन्न

विगत दिनों आगरा में नागरी प्रचारिणी के सभागार में बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान द्वारा बाबूजी के 126वें जयंती समारोह का उद्घाटन प्रो० मुहम्मद मुजल्लिम ने किया तथा अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सर्वश्री बी०एस० शांताबाई को 'बाबू गुलाब राय सम्मान', टी०जी० प्रभाशंकर 'प्रेमी' एवं रामेंद्र त्रिपाठी को 'बाबू धर्मपाल विद्यार्थी सम्मान', बाँकेलाल महेश्वरी को 'रमाशंकर गुप्त सम्मान' तथा देवनारायण भारद्वाज को 'बाबू प्यारेलाल विज्ञान लेखन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

स्मृति शेष

वरिष्ठ कथाकार अमरकांत नहीं रहे

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित वयोवृद्ध साहित्यकार अमरकांत का विगत 17 फरवरी को निधन हो गया। 1 जुलाई 1925 को उत्तर प्रदेश के बलिया में जन्मे अमरकांत ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। अमरकांत को प्रेमचंद की परम्परा का कहानीकार माना जाता है। अपने उपन्यास 'इन्हीं हथियारों में' के लिए वर्ष 2007 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से और वर्ष 2009 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें वर्ष 2009 के लिए व्यास सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है। पत्रकारिता एवं साहित्य लेखन से आजीवन जुड़े रहने वाले अमरकांत ने लम्बे समय तक हिन्दी पत्रिका 'मनोरमा' का सम्पादन भी किया। 'दोपहर का भोजन', 'डिप्टी कलेक्टरी' तथा 'जिन्दगी और जोंक' आदि उनकी विश्वविख्यात कथाएँ हैं।

नहीं रहे खुशवंत सिंह

वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार और राजनीतिक विश्लेषक, विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'ट्रेन टू पाकिस्तान' के लेखक खुशवंत सिंह का 99 वर्ष की उम्र में सुजान सिंह पार्क स्थित उनके आवास पर 20 मार्च 2014 को दोपहर निधन हो गया। वह लम्बे समय से बीमार थे। उनका अन्तिम संस्कार लोधी रोड विद्युत श्मशान गृह में किया गया।

52 पी-एच०डी० हो चुकी खुशवंत सिंह पर

बुलंदशहर। बहुत कम लोग जानते होंगे कि हिन्दी भाषा के मुहावरों को अंग्रेजीदां लोगों तक पहुँचाने वाले खुशवंत सिंह ही थे। ताउम्र अंग्रेजी के लेखक-पत्रकार रहे खुशवंत सिंह को हिन्दी भाषा से भी बहुत प्रेम था। उन्होंने अपने जीवन में सर्वाधिक भाषण हिन्दी में ही दिए। हिन्दी संस्कृति को अंग्रेजी उपन्यास और छोटी-छोटी कहानियों में लिखकर दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने वाले भी खुशवंत सिंह ही थे। खुशवंत सिंह पर सागर विश्वविद्यालय से पहली पी-एच०डी० कर चुके बुलंदशहर के डी०ए०वी० पी०जी० कॉलेज के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० विकास शर्मा के अनुसार खुशवंत सिंह पर दुनिया भर में 52 पी-एच०डी० की जा चुकी हैं। इनमें से चार पी-एच०डी० डी०ए०वी० कॉलेज में उनके निर्देशन में ही पूरी हुई हैं।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, अनेक साहित्यकारों और पत्रकारों ने उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, संप्रग अध्यक्ष सोनिया गाँधी, पूर्व क्रिकेटर बिशन सिंह बेदी, वरिष्ठ स्तंभकार कुलदीप नैयर सहित तमाम चर्चित हस्तियाँ उनके आवास पर शोक संवेदना प्रकट करने पहुँचीं।

भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में लोकप्रिय खुशवंत सिंह अपने बेबाक लेखन और खुशमिजाज व्यक्तित्व के लिए जाने जाते थे। पद्मभूषण और पद्मविभूषण से सम्मानित खुशवंत सिंह का जन्म वर्ष 1915 में हडली (अब पाकिस्तान में) हुआ था। स्वतन्त्रता-पूर्व तक दुनिया में चल रही कालोनियल इंग्लिश से अलग थोड़ी बेबाक अमेरिकन अंग्रेजी को अपनी लेखनी का हमसफर बनाकर खुशवंत ने अपने लेखन को जो हलचली तेवर दिया तो वे एक पूरी पीढ़ी के हीरो बन गए। उनकी सबसे बड़ी खासियत रही उस दौर में उनका बिंदासपन।

उनका लेखन पाठकों पर लादे जाने वाला कोई गरिष्ठ साहित्य नहीं, पाठकों से सीधे संवाद का सरल माध्यम हुआ करता था। इसी अंदाज ने खुशवंत को स्वयं में एक 'स्वतन्त्र अध्याय' के रूप में प्रतिष्ठित किया।

कथाकार कर्नल शिवनाथ नहीं रहे

7 फरवरी को डोगरी के वरिष्ठ कथाकार कर्नल शिवनाथ का दिल्ली में निधन हो गया। वे 89 वर्ष के थे। डोगरी साहित्य में शिवनाथ अपनी आधुनिक शैली के अलावा आलोचना के लिए भी जाने जाते थे। उन्हें 2004 में साहित्य अकादेमी का सम्मान भी प्राप्त हुआ था।

अमेरिकी लोक गायक का निधन

कोलकाता। महान अमेरिकी लोक गायक पीट सीगर का अमेरिका के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 94 वर्ष के थे। सीगर ने 1963 में कोलकाता में बंगाली गीतकार एवं गायक कबीर सुमन के साथ महात्मा गाँधी का प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम, सबको सन्मति दे भगवान' गाकर काफी सुर्खियाँ बटोरी थीं।

डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर का निधन

कोचिन विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रमुख मलयालमय-हिन्दी अनुवादक एवं अनुवाद चिन्तक डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर जी का स्वर्गवास 7-3-2014 को तिरुवनन्तपुरम में हुआ। वे तमिल, संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे।

सेवानिवृत्ति के बाद भी वे अनुवाद, मौलिक लेखन, हिन्दी प्रचार अभियान आदि में लगे हुए थे। हिन्दी ललित निबन्धकार के रूप में उन्होंने अलग पहचान बना ली थी। उन्हें कई महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से अलंकृत किया गया था।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

विविध विषय विदुषी प्रो० प्रेमलता शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व निवेदिका : डॉ० श्रीमती अर्चना दीक्षित, प्रकाशक : डॉ० श्रीमती अर्चना दीक्षित, मूल्य : 200/- रु० मात्र।

डॉ० श्रीमती अर्चना दीक्षित द्वारा रचित यह ग्रन्थ एक विशिष्ट कृति है। यद्यपि ग्रन्थ का केन्द्र बिन्दु डॉ० प्रेमलता शर्मा का संगीत क्षेत्र में योगदान है पर विद्वान लेखिका ने डॉ० शर्मा के इस अवदान की भूमिका के लिये उनके सम्पूर्ण जीवन और कृतित्व को अपनी परिधि में ले लिया है।

ग्रन्थ का आरम्भ श्रीमती डॉ० दीक्षित प्रेमलताजी के जीवन-परिचय से करती हैं और इस पर विस्तार से प्रकाश डालती हैं। डॉ० शर्मा ने संगीत संकाय में सेवा करते हुए क्रियात्मक संगीत की सेवा तो की ही साथ ही संगीत-शास्त्र विभाग को एक निश्चित आकार दिया और देश को संगीतज्ञ के साथ ही संगीत-शास्त्री दिये। इस कार्य की महत्ता को अस्वीकारा नहीं जा सकता।

पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है, इसलिये नहीं कि उसमें किसी एक विदुषी का जीवन चरित्र है बल्कि युवा पीढ़ी और छात्र इसे पढ़कर प्रेरणा ले सकते हैं कि कैसे जीवन को महान बनाया जा सकता है। **—डॉ० भानुशंकर मेहता**

वर्तमान साहित्य : (फरवरी 2014) सम्पादक : नमिता सिंह, प्रकाशक : 28, एम०आई०जी०, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001

समकालीन साहित्य समाचार : (जनवरी-फरवरी-मार्च 2014) सं० सत्यव्रत, किताबघर प्रकाशन, पो०बॉ० 7240, नई दिल्ली-110002

साहित्य परिक्रमा : (जनवरी-फरवरी-मार्च 2014) सं० श्रीमती क्रान्ति कनाटे, राष्ट्रोत्थान भवन, माधव महाविद्यालय के सामने, नई सड़क, ग्वालियर-474001

साक्षात्कार : (जनवरी 2014) सं० प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल, साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति भवन, बाणगंगा, भोपाल-3

भाषा स्पंदन : (अंक 32-33) सम्पादक : डॉ० मंगल प्रसाद, कर्नाटक हिन्दी साहित्य अकादमी, 853, 8वाँ क्रॉस, 8वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर-560095

वार्ता वाहक : (फरवरी 2014) सम्पादक : श्री वत्सकर शर्मा, सचिव, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, संकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक-753012

दस्तावेज़ : (140) सं० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, बेतियाहाता, गोरखपुर-273001

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद पत्रिका : (जनवरी 2014) प्रधान सम्पादक : श्री आर० चन्द्रशेखर, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, 58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बेंगलूर-560010

हिन्दी प्रचार वाणी : (फरवरी 2014) सम्पादक : सुश्री वी०एस० शांताबाई; कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, 178, चौथा मेन रोड, चामराजपेट, बेंगलोर-560018

मंगल प्रभात : (फरवरी 2014) सम्पादक : प्रो० रमेश भारद्वाज, 1 जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली-110002

श्री वीरेन्द्र गुप्त नहीं रहे

8 फरवरी को बहुआयामी रचनाकार श्री वीरेन्द्र गुप्त का निधन हो गया। उनका जन्म 29 अगस्त, 1928 को सहारनपुर में हुआ था। उन्होंने उपन्यास, आलेख, इतिहास, साक्षात्कार, काव्य, अनुवाद अनेक विधाओं में काम किया। अपनी किस्सागोई और इतिहास सम्बन्धी गम्भीर अध्ययन के लिए ख्यात कथाकार वीरेन्द्र गुप्तजी का 'विष्णुगुप्त चाणक्य' उपन्यास बेजोड़ और चर्चित रहा।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 15 **अंक : 3-4**

मार्च-अप्रैल 2014

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

पो०बॉक्स 1149, विशालाक्षी भवन (भूगर्भ तल),
चौक (चौक पुलिस स्टेशन से संलग्न)
वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

P.O. Box : 1149, Vishalakshi Building (Basement),
Chowk (Adjacent to Chowk Police Station),
VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 • Mobile : (0) 9198701115

E-mail : **sales@vvpbooks.com ▪ vvpbooks@gmail.com**

Website : **www.vvpbooks.com**